पुरुषोत्तम मास महात्म्य
DESIGNER

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

पुरुषोत्तम मास

महात्म्य

(सरल हिन्दी भाषा में)

प्रकाशक

0181-2212696
0181-2261421

महामाया पब्लिकेशनज़
सदर बाजार, जालन्धर कैंट।
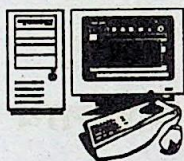
मूल्य 20/-

कम्प्यूटरीकृत पृष्ठ सज्जा :
आर. के. कम्प्यूटर्स, जालन्धर

मुद्रक :

प्रकाशक :
महामाया पब्लिकेशनज़
सदर बाजार, जालन्धर कैंट।
फोन : 0181-2212696, 2261421

अनुक्रमणिका

॥ श्री गणेशाय: नम: ॥

पुरुषोत्तम मास माहात्म्य
सरल भाषा

पहला अध्याय

एक बार बहुत से ऋषि मुनिजन नैमिषारण्य तीर्थ में जाकर यज्ञ करने में तत्पर थे। उसी समय श्री सूतजी तीर्थयात्रा के निमित्त भ्रमण करते हुए, अपने शिष्यों सहित वहाँ पर आए मुनियों को देखकर नमस्कार कर आनन्द मग्न हो गए। वल्कल वस्त्र पहने प्रसन्न मुख, चेहरे पर कान्ति, परमार्थ में निपुण चन्दन से शोभायमान, तुलसी की माला तथा जटाओं का मुकुट धारण किये हुए 'महाशरणम् इस अद्‌भुत् मन्त्र को जपते हुए, सूतजी को देखकर नैमिषारण्य के महर्षि लोग उठकर खड़े हो गये।'

मुनियों ने हाथ जोड़कर कहा कि-हे सूत जी! हम सब लोगों को भगवान की अद्‌भुत कथाओं को सुनने की इच्छा है। तब सूतजी ने प्रसन्नता से सब ऋषियों के आगे हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। ऋषि कहने लगे कि हे सूतजी! हमने आपके लिये सुन्दर आसन बनाया है आप इस पर बैठिये।

आप बड़े भाग्यवान हैं। आपने गुरु की कृपा से भागवत् के रहस्यों का वर्णन करने की शक्ति प्राप्त की है। इस संसार सागर में हजारों बातें सुनने योग्य हैं, परन्तु उनमें जो भी सार वस्तु हो, संसार सागर में डूबते को पार करने के लिये, जो शुभ श्रेष्ठ कथा आपके विचार में हो वही बताइये।

शौनकादिक ऋषियों के पूछे जाने

पर श्री सूतजी कहने लगे–हे विप्रों! मेरे वचनों को सुनो। मैं पहले पुष्कर तीर्थ गया और वहाँ से हजारों तीर्थों में होता हुआ, हस्तिनापुर गया। वहाँ राजा परीक्षित अपने राज्य को छोड़ कर अनेक महा पुण्यवान ऋषियों के साथ गंगा किनारे जा रहे थे। उनमें अनेक सिद्ध योगी और महासिद्ध मुनि थे।

मैं वहाँ पर उस समाज को पूछ ही रहा था तो वहाँ श्री कृष्ण भगवान के चरण कमल में मन लगाए, महामुनि व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी पधारे। जिनकी आठ वर्ष की आयु शंख के समान कंठ, ऊँचे और चिकने केशों से घिरा हुआ मुख, दृढ़ कन्धे, चमकती हुई कान्ति थी। वह अवधूत वेश, ब्रह्मस्वरूप थे।

ऐसे महामुनि शुकदेवजी को देखकर भी मुनि हाथ जोड़कर खड़े हो गए। तब मुनियों के बनाये हुए कमल चक्र जैसे ऊँचे आसन पर शुकदेव जी को बिठाया गया। उस आसन पर बैठे हुए ज्ञान समुद्र के चन्द्रमा शुकदेव जी ऋषियों की पूजा को ग्रहण कर ऐसे शोभायमान हुए जैसे तारागण में चन्द्रमा शोभायमान होता है।

दूसरा अध्याय

सूत जी कहने लगे-हे ऋषियों! श्री शुकदेवजी को राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत की कथा सुनाते हुए देखकर आया हूँ। ऋषि कहने लगे- हे सूतजी! जो कुछ आपने वेद व्यास जी के मुख से सुना हो वही कथा सुनाइये। सूतजी बोले हे ऋषियों! जैसा मुझमें ज्ञान है और मैंने व्यास जी के मुख से सुना

है, वह मैं तुमसे कहता हूँ।

एक समय नारद जी विचरते हुए भगवान् नारायण के निवास स्थान में पहुँचे। वहाँ पर भगवान् के चरणों से अलकनन्दा नदी बह रही थी। वहाँ पर ब्रह्म में लीन जितेन्द्रिय, निर्मल और तेजोमय ऋषि को देखकर भगवान् ने उनको नमस्कार किया। तब साष्टाँग नमस्कार कर श्री विष्णु की स्तुति करते हुए नारद जी कहने लगे- हे देवाधिदेव! संसार के स्वामी! दयासिन्धु, आप सत्यवादी हो, त्रिसत्य हो, सत्य के साररूप सत्य से ही उत्पन्न हो और सत्य योनि हो, आपको नमस्कार है।

हे भगवान्! सब प्राणियों के हृदय विषयों में आसक्त है, स्त्री पुत्रादि के मोह में फँसे हुये गृहस्थी लोगों का हित

करने वाला लाभदायक कथा व्रत कुछ विचार कर मुझे बतलाइये। मैं आपके मुखारविन्द से कुछ सुनने के लिये ब्रह्मलोक से आया हूँ। नारदजी के ऐसे वचनों को सुनकर भगवान् हँसकर नारद जी से कहने लगे कि हे नारद! भगवान् श्रीकृष्णादि की पुण्य कथा को सुनो। हे तात! जगत् के विधाता और उसको एक पलमात्र में नाश करने वाले उनके कर्मों को कहने वाला पृथ्वी पर कौन समर्थ है? हे नारद जी! ऐसे भारयुक्त कथा भी तुम जानते हो, परन्तु फिर भी दरिद्रता को हरने वाला, यश और श्रेष्ठ पुत्रों को देने वाला, मोक्ष देने वाला तथा शीघ्र सेवन योग्य, ऐसे अद्भुत पुरुषोत्तम मास माहात्म्य को कहता हूँ।

नारदजी कहने लगे कि–हे प्रभो!

स्वामियों सहित मैंने चैत्रादि मास तो सुने हैं, परन्तु उनमें पुरुषोत्तम मास नहीं सुना। यह पुरुषोत्तम कौन सा मास है और यह कैसे हुआ हे कृपानिधे! यह सब आप मुझसे कहिये। इस मास का स्वरूप और विधान मुझसे कहिये। क्या करना, चाहिये, स्नान कैसे करें और दान क्या करें, और जप, पूजा तथा उपवासादि क्या साधन है? इसके अतिरिक्त और भी कोई सार हो यह सब बतलाइये। सूत जी कहने लगे हे ऋषियों! नारद जी के ऐसे जनहितकारक वचनों को सुनकर भगवान चन्द्रमा के समान शीतल और शान्ति देने वाले वचन बोले।

तीसरा अध्याय

हे नारद जी! जो कुछ भगवान् कृष्ण ने राजा युधिष्ठिर से कहा वही मैं तुमसे

कहता हूँ। एक समय धर्मराज युधिष्ठिर जुए में दुर्योधन से सब कुछ हार गए तो द्रौपदी को बालों से पकड़कर दुष्ट दुःशासन ने खींचा और वस्त्र भी पकड़कर खींचे तो कृष्ण भगवान ने रक्षा की। उसके पश्चात् युधिष्ठिरादि राज्य को छोड़कर काम्यक वन को चले गए। वहाँ पर वन में युधिष्ठिर द्रौपदी आदि बाल बिखेरे वन में रहने वाले हाथियों की तरह वन के फलों को खाकर अति दुःख को प्राप्त हुए।

एक समय देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण भगवान उनको दुःखी जानकर, काम्यक वन को गए। उस समय युधिष्ठिरादि श्री कृष्ण भगवान को देखकर ऐसे प्रसन्न हुए मानो देह में प्राण आ गये हों। वे बड़े प्रेम से मिले और हरि के चरण

कमलों में नमस्कार किया। द्रौपदी ने भी प्रणाम किया। राजा युधिष्ठिर को दुःखी देखकर और ऐसे ही द्रौपदी को दुःखी देखकर श्रीकृष्ण भगवान भी अत्यन्त दुःखी हुए।

जब विश्वात्मा, भक्तवत्सल, भगवान ने दुर्योधन को भस्म करने के लिए क्रोध किया तो मानो करोड़ों काल कराल के समान मुख से प्रलयकाल की अग्नि उठी हो और दाँतों को पीसते हुए मानो त्रिलोक को भस्म कर देंगे तब अर्जुन भय से काँप उठे।

युधिष्ठिर और द्रौपदी तथा दूसरे उपस्थित जन हाथ जोड़कर भगवान को प्रसन्न करने के लिए स्तुति करने लगे। तब श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन के इस प्रकार स्तुति वचन सुनकर शीतल हो

गये, फिर प्रेम से व्याकुल होकर युधि-ष्ठिरादि, श्रीभगवान को बारम्बार नमस्कार करने लगे।

श्रीनारायण कहने लगे कि हे नारद जी! इस प्रकार प्रेम से मग्न हो सिर झुकाकर, हाथ जोड़ बारम्बार भगवान कृष्ण को नमस्कार कर, अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से जो प्रश्न किया वह मैं तुमसे कहता हूँ। हरि भगवान यह सब सुनकर पाँडवों के हितकारक वचन कहने लगे। कृष्ण कहने लगे हे अर्जुन! मेरे वचनों को सुनो और आपने जो अपूर्व प्रश्न किया है, इस समय मैं इसका उत्तर देने को समर्थ नहीं। यह गुप्त प्रश्न ऋषियों को भी कठिन है तो भी हे अर्जुन! मैं तुम्हारी मित्रता और भक्ति से प्रसन्न होकर अत्यन्त कठिन उत्तर को क्रम से

कहता हूँ सुनो।

हे अर्जुन! एक समय में संयोगवश अधिक मास आया। उसको सब असहाय निन्दक, अपूज्य मलमास और नवि की संक्रान्ति से वर्जित ऐसा कहते हैं। मल (गन्दा) मास होने से स्पर्श करने योग्य नहीं है, सब कर्मों में निन्दित है।

इस प्रकार लोगों के वचन सुनकर, वह मलमास कान्तिहीन, निरुद्योगी दुःखों से युक्त मेरे पास आया और बैकुण्ठ में जहाँ पर मैं निवास करता था, स्वर्ण के सिंहासन पर बैठे हुए देखकर, मुझको दण्डवत् प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़ नेत्रों से आँसू बहाता हुआ इस प्रकार कहने लगा।

चौथा अध्याय

अधिक मास कहने लगा-हे नाथ! हे कृपानिधे! मलमास मेरा नाम है। मैं बलवानों से तिरस्कृत होकर यहाँ आया हूँ। फिर आप मेरी रक्षा क्यों नहीं करते? मुझको उन लोगों ने शुभ कर्म वर्जित अनाथ और सदैव घृणा की दृष्टि से देखा। अब आपकी दयालुता कहाँ गई? कठोरता क्यों हुई?

इस प्रकार भगवान से कहकर मलीन मुख मलमास श्रीकृष्ण के आगे आँसू बहाता हुआ बैठ गया। तब द्रवीभूत हरि आगे बैठे दीन बदन मलमास से कहने लगे हे तात! तुम अत्यन्त दुखों में डूबे हो, सो ऐसा भारी दुःख तुम्हारे मन में क्या है। तुम किसी प्रकार का सोच मत करो। मैं तुझे दुःख में डूबे हुए का उद्धार

करूँगा। मेरी शरण में आकर तुम सोच करने योग्य नहीं हो।

नारायण बोले-ऐसे भगवान के वाक्य सुनकर मलमास दुःखी होकर मधुसूदन भगवान से बोला हे भगवान! आपको सब कुछ ज्ञात है। आपके बिना इस संसार में कुछ भी नहीं होता। हे भगवान मेरे दुर्भाग्य की पीड़ा क्या आप नहीं जानते? तो भी हे नाथ दुःख रूपी फांस में फँसा हुआ जैसा दुःख किसी को न हुआ, न देखा, सो आपसे कहता हूँ। क्षण, लव, मुहूर्त, पक्ष मास और दिन रात्रि अपने स्वामी की आज्ञा से सदा भय रहित होकर आनन्द करते हैं। परंतु न मेरा कोई नाम है, न मेरा धर्म न कोई मुझको आश्रय देने वाला है। इसी से सब देवताओं ने मेरा निरादर किया है

और शुभ कर्मों में यह मलमास वर्जित है ऐसा सभी अन्ध परम्परा से कहते हैं, इसलिए मैं मरना चाहता हूँ, जीना नहीं चाहता।

हे नारद जी! मैं मरूँगा, मैं मरूँगा, मैं मरूँगा, इस प्रकार बारम्बार कह कर मलमास शांत हो गया।

पाँचवां अध्याय

नारद जी श्री नारायण से कहने लगे- हे महाभाग! चरणों में पड़े हुए अधिकमास को भगवान ने क्या कहा? भगवान बोले- हे निष्पाप नारद! जो हरि ने कहा सो मैं तुमसे कहता हूँ। सुनो हे मुनि श्रेष्ठ! कृष्ण भगवान के नेत्रों से संकेत पाकर गरूड मूर्छित हुए मलमास को अपने पंखों से हवा करने लगे। तब मलमास उठकर बोला-हे नाथ! मुझको यह अच्छा नहीं

लगता! हे जगत् पते! मुझ शरणागत को क्यों त्यागते हो, रक्षा करो।

इस प्रकार कांपते हुए बारम्बार कहते हुए मलमास से भगवान कहने लगे-हे वत्स! हे पुरुषोत्तम! मुझसे तेरा दुःख नहीं देखा जाता है। तू सोच मत कर, उन योगियों के भी दुर्लभ ऐसे गोलोक में मेरे साथ चल, जहाँ गोपी गणी के बीच में बैठे हुए दो भुजा वाले, मुरली हाथ में लिये, नवीन मेघ के समान श्याम रङ्ग कमल सद्दश नयन वाले ऐसे ईश्वर श्री कृष्ण भगवान रहते हैं। श्री कृष्ण भगवान गौलोक में तेरे दुःख को दूर करेंगे। चलो वहाँ पर चलते हैं।

श्री नायारण कहने लगे कि इतना कह हरि भगवान मल मास का हाथ पकड़कर गौलोक को ले गये।

छठा अध्याय

नारद बोले-हे पाप रहित! विष्णु भगवान ने गौलोक में जाकर क्या किया सो कृपा करके मुझसे कहिए। श्री नारायण कहने लगे-हे नारद! श्री विष्णु भगवान जब अधिक मास सहित गौलोक में गये तो वहाँ क्या हुआ सो मैं तुमको सुनाता हूँ। गौलोक में मणियों के खम्भों से सुशोभित भगवद्धाम जिसमें मनोहर ज्योति स्थान दावानल के समान विष्णु भगवान ने दूर से ही देखा। उस तेज से नेत्र मुंद गये। फिर अधिक मास को भगवान पीछे करके कुछ थोड़े से नेत्र खोलकर धीरे-धीरे आगे बढ़े।

जब उस स्थान के पास पहुँचे तो अधिक मास सहित विष्णु बड़े प्रसन्न हुए। द्वारपाल ने इनको नमस्कार किया।

रत्नों के सिंहासन पर गोपियों के बीच में बैठे हुए श्रीकृष्ण को रमानाथ श्री विष्णु जी ने नमस्कार किया। फिर विष्णु ने काँपते हुए मलमास को श्री कृष्ण के चरणों में डाल दिया तब श्री कृष्ण भगवान कहने लगे कि यह कौन है, और इस गौलोक में किस लिए रोता है। क्या इसका दुःख कोई नहीं दूर कर सकता? श्री नारायण कहने लगे कि हे नारद! गौलोक नाथ के वचनों को सुनकर नारायण भगवान ने आसन से उठकर आदि से अन्त तक मलमास का सब वृतान्त सुनाया। इस प्रकार दुःख रूपी जला हुआ यह मरने को तैयार हुआ। तब दूसरे दयालु पुरुषों से प्रेरित किया गया यह मेरे पास आया। हे ऋषिकेश! मेरी शरण में आकर दुःख

जाल से घिरा हुआ, बारम्बार रोता हुआ और काँपता हुआ यह सब कहने लगा। इसके महादुःख को आपके बिना कोई निवारण नहीं कर सकता। इसीलिये इस स्वामी रहित को हाथ पकड़ कर आपके पास लाया हूँ।

इस प्रकार श्री विष्णु भगवान कह कर हाथ जोड़कर श्री कृष्ण भगवान के आगे खड़े हो गये। इतनी कथा सूत शौनकादि ऋषि कहने लगे हे सूत जी! विष्णु और श्रीकृष्ण का सम्वाद सब लोगों के लिये उपकार करने वाला है, गौलोकवासी श्रीकृष्ण ने क्या कहा और क्या किया उसको विस्तार पूर्वक कहिये।

सातवाँ अध्याय

सूत जी कहने लगे–हे ऋषियों! जब विष्णु भगवान मलमास का अपार दुःख कहकर चुपचाप आसन पर बैठ गये, तो श्रीकृष्ण ने विष्णु को जो गुप्त वचन कहे, वह मैं तुमसे कहता हूँ। श्री पुरुषोत्तम बोले–हे विष्णु! आपने बहुत अच्छा किया जो मलमास का हाथ पकड़कर यहाँ पर ले आये। इससे लोक में महान् कीर्ति पाओगे। जिसको तुमने स्वीकार किया उसको मैंने भी स्वीकार कर लिया। इसको मैं अपने समान ही करूँगा। गुण, कीर्ति, ऐश्वर्य पराक्रम, भक्तों को वरदान, मेरे समान सभी गुण इसमें होंगे। जैसे मैं लोक में प्रसिद्ध हूँ, वैसे ही यह भी पुरुषोत्तम नाम से विख्यात होगा। जो गुण मुझमें है वही

मैंने इसको दिये। हे जनार्दन तुम्हारी प्रसन्नता के लिये मैंने अपने सभी गुण इसको दे दिये यह पुरुषोत्तम के नाम से जगत् में विख्यात होगा और मेरे समान होकर सब मासों का स्वामी होगा। अब यह जगत का पूज्य, जगत के नमस्कार करने योग्य होकर पूजनीय होगा और पूजने वालों का दुःख, दरिद्रता का नाश करेगा। सब मास इच्छा वाले हैं, मैंने इसको इच्छा रहित किया। मनुष्यों को मोक्ष देने वाला, अपने बराबर मैंने इसको किया। जो कोई इच्छा रहित या इच्छा वाला इसको पूजेगा वह अपने किये कर्मों को भस्म करके, निःसंशय मुझको प्राप्त होगा।

हे गरूड़ध्वज! महाभाग्यशाली यती, ब्रह्मचारी महात्मा निराहारी भी मेरे परम

स्थान को प्राप्त नहीं होते हैं। परन्तु पुरुषोत्तम के भक्त मास भर में जन्म मृत्यु से रहित हो बिना परिश्रम के ही हरि के पद को पा सकते हैं। सब साधनों में श्रेष्ठ सब काम तथा अर्थ को देने वाला यह पुरुषोत्तम मास स्वाध्याय योग्य है। जैसे हल से बोये हुए बीज करोड़ों गुना बढ़ते हैं वैसे ही पुरुषोत्तम मास में किया हुआ पुण्य कोटि गुना बढ़ता है। कोई चतुर्मास के व्रत, व्रतों द्वारा, स्वर्ग में जाकर वहाँ के भोगों को भोगकर फिर इस पृथ्वी में आते हैं, किन्तु जो पुरुषोत्तम का आदर से विधिपूर्वक सेवन करता है, वह अपने कुल का उद्धार करके मुझको ही प्राप्त होगा।

जो महा अज्ञानी मनुष्य इस मास में जप दानादि नहीं करते और अच्छे कर्म

नहीं करते, देव तीर्थ तथा ब्राह्मण से वैर करते हैं। वे दुष्ट भाग्य पर जीने वाले हैं। उनको खरगोश के सींग के समान स्वप्न में भी सुख नहीं होगा। जब मूढ़ मनुष्य मेरे प्रिय मल मास का तिरस्कार करेंगे, और जो धर्म का आचरण नहीं करेंगे, वे सदैव नरक के गामी होंगे। जो पुरुषोत्तम के निमित तीन-तीन वर्ष में धर्म का आचरण नहीं करते वह कुम्भी पाकादि नरकों में पड़ते हैं। जो अज्ञानी पुरुष, स्त्री, पुत्र, पौत्र आदि के बन्धन में फँसा रहता है। वह अज्ञानी दुःख रूपी दावानल में पड़ा रहता है। जिसका अज्ञान से मेरा प्रिय, अत्यन्त पुन्यदान पुरुषोत्तम मास बीत गया, उनको कैसे सुख प्राप्त हो सकता है? श्रेष्ठ भाग्य वाली जो स्त्रियाँ पुत्र सुख सौभाग्य के

लिये पुरुषोत्तम मास में स्नान, दान तथा पूजन करेंगी, उनको मैं सौभाग्य, सम्पत्ति, सुख पुत्र दूँगा और जो मेरे इस मास को ऐसे ही व्यतीत कर देंगी उनको मेरे प्रतिकूल और स्वामी से सुख नहीं होगा। भाई पुत्र तथा धन का सुख तो उनको स्वप्न में भी प्राप्त नहीं होगा।

अतः सब मनुष्यों को मेरे इस मास में स्नान पूजा, जपादि करना चाहिए। विशेष करके अपने शक्ति के अनुसार दान करना चाहिए। जिसने भक्ति और श्रद्धा से पुरुषोत्तम मास में मेरी पूजा की वह धन तथा पुत्र का सुख भोगकर अन्त में मेरे गौलोक में वास करेगा। मेरी आज्ञा से सभी मनुष्य मलमास को पूजेंगे। मैंने सब मासों में उत्तम इसको किया है इसलिये हे रमापते! तुम चिंता

छोड़ कर पुरुषोत्तम मास को लेकर बैकुण्ठ को जाओ।

आठवाँ अध्याय

सूत जी कहने लगे कि हे तपोधनो! भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण के वचन सुनकर नारद जी अत्यन्त प्रसन्न हुये, परन्तु फिर भी प्रश्न करने लगे। नारद जी कहने लगे-हे प्रभो! लक्ष्मीपति जब बैकुण्ठ को चले गये फिर क्या हुआ वह सब कृपा करके मुझसे कहिये। हरि का वृत्तान्त सबके लिए हितकारक है। ऐसे प्रश्न से प्रसन्न होकर श्रीनारायण जगत को आनन्द देने वाले वचन-श्रीनारायण कहने लगे-हे नारद! जब लक्ष्मीपति बैकुण्ठ चले गये तो अधिक मास को अपने धाम में अपने पास बुलाया। वहाँ बैकुण्ठ में बसकर अधिक

मास अत्यन्त आनन्द करने लगा और भगवान के साथ क्रीड़ा करने लगा। श्रीकृष्ण ने मन से प्रसन्न होकर मल मास को बारह मासों में श्रेष्ठ कर दिया और सबका प्रिया बना दिया।

इस प्रकार भक्त वत्सल भगवान युधिष्ठिर और द्रौपदी को कृपा से देखते हुए अर्जुन से बोले हे राजसिंह! दुःख में डूबे होने के कारण तुमने तपोवन में आये पुरुषोत्तम का आदर नहीं किया और वृन्दावनचन्द्र का प्रिय मास, आपके वन में रहने से, अनजाने से चला गया। भय से दुःखित मन वाले भीष्म, द्रोण भी नहीं जान पाये और भय के द्वेष से तुमने नहीं जाना, वेद व्यास जी से प्राप्त विद्या, आराधना में लगे रहे। भयंकर युद्ध शाली अर्जुन इन्द्रप्रस्थ गए और उसके दुःख से

दुःखित आप लोगों में नहीं जाना। अतः अब क्या करना चाहिये? मनुष्य को प्रारब्ध भोग अवश्य भोगना पड़ता है। मनुष्य प्रारम्भ से ही सुख, दुःख भय और आनन्द को प्राप्त होता है। अतः सदा भाग्य पर ही भरोसा रखो।

हे महाराज! अब आपके दुःख का दूसरा कारण कहता हूँ। इतिहास पूर्वक इस कथा को अच्छी तरह श्रवण करो। कृष्ण कहने लगे–यह द्रौपदी पूर्व जन्म में महाभाग्यशाली ब्राह्मण की पुत्री थी। कुछ काल व्यतीत होने पर बारह वर्ष की हो गई। अपने पिता की यह एक ही पुत्री थी और बड़ी चतुर, गुणवती और सुन्दरी होने का कारण यह पिता को अत्यन्त प्रिय थी। यह पड़ोसन सखियों का सुख देखकर पुत्र, पौत्र की इच्छा

करने लगी और विचारने लगी कि ऐसे मेरे भी अच्छे गुण और भाग्य वाले भर्त्ता और सुख देने वाले श्रेष्ठ पुत्र किस तरह उत्पन्न हों। परंतु प्रारब्ध ने तो पहले ही नाश कर दिया। क्या करूँ, क्या किसी मुनि के पास जाऊँ या किसी तीर्थ में जाकर वहाँ पर रहूँ? मेरा भाग्य कैसे सो गया है कि कोई भर्त्ता मेरी इच्छा नहीं करता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि मेरे भाग्य से मेरा पंडित पिता भी मूढ़ हो गया है। विवाहकाल प्राप्त होने पर भी मुझे अच्छे वर को नहीं सौंपता।

पति के दुःख की पीड़ा तथा कुमारी में स्वामी का सुख, जैसा मेरी सखियाँ जानती हैं मैं नहीं जानती। ऐसे आकुल तथा व्याकुल वाले मनोरथ की चिन्ता से मेरी भाग्यवती माता पहले ही मर गई।

शोक और मोह की तरंगों से पीड़ित कन्या का पिता मेधावी ऋषिराज भी पृथ्वी में विचरने लगा, पर कन्यादान के निमित्त जोड़ी का वर ढूँढने पर नहीं मिलने से अपने, मनोरथ में निराश हो गया। पुत्री के और उसके अपने दुर्भाग्य से उसको दारुण तीव्र ज्वर हो गया तब वह ऋषिराज, सब शरीर में अति शूल होने के कारण व्याकुल हो गया और श्वास पर श्वास से युक्त होकर, लौटता गिरता, घर आकर पृथ्वी पर गिर पड़ा जैसे मदिरापान करने से मूर्छा को प्राप्त हो जाता है और अपनी पुत्री का स्मरण किया जब तक पुत्री भय से व्याकुल होकर अपने पिता के पास आई, तब तक वह मरने के सदृश हो गया।

दैवयोग से अकस्मात् कांपता हुआ

और कन्यादान के प्रसंग से उठे हुए महोत्सव से रहित वौर पूर्वकाल के लिए गृहस्थी धर्मों से रहित होकर संसार की वासना को छोड़कर, हरि में मन को लगाता वह मेधावी ऋषिराज श्री हरिपुरुषोत्तम को स्मरण करने लगा। हे श्रीकृष्ण! हे गोविन्द! हे हरे! हे मुरारे! हे राधेश! हे दामोदर! हे दीनानाथ! हे हृषिकेशवर! आपको नमस्कार करता हूँ आप मेरी इस संसार रूपी समुद्र से रक्षा करिये।

इस प्रकार मुनि के वचन सुनकर बहुत जल्दी भगवान के पार्षद्, मरे हुए मुनि के जीवात्मा को लेकर भगवान के बैकुण्ठ धाम को चले गये और वह पुत्री पिता का मरण सुनकर हाय-हायकर रोती और पिता के देह को गोदी में लेकर

विलाप करने लगी। अत्यन्त दुःखित होकर दारुण विलाप करती हुई मानो उसका पिता जीवित हो अत्यन्त व्याकुल होकर कहने लगी हाय पिता! हाय पिता! मुझको किसके सहारे छोड़कर विष्णु लोक में चले गये। हे तात! अब मैं बिना पिता के किसके पास रहूँगी, न मेरे भाई है, न कोई कुटुम्बी, मेरी तपस्विनी माता भी नहीं है, जो मेरे भोजन तथा वस्त्रों की चिन्ता करती। अब इस दशा में मैं भी मर जाऊँगी। जीने से अब क्या काम है?

उसे इस प्रकार बारम्बार रोते और विलाप करते हुए सुनकर उस वन के रहने वाले ब्राह्मण सोचने लगे कि अत्यन्त करुणा भरे स्वर से इस तपोवन में कौन रोता है? फिर तपस्वी मेधावी

ऋषि की पुत्री का रोना निश्चय करके वहाँ पहुँचे और वहाँ पुत्री की गोद में मरे हुए मुनि को देखकर वन में रहने वाले मुनि ऋषि की लाश को लेकर श्मशान घाट में ले जाकर अंत्येष्ट विधि से चारों तरफ काष्ठ लगाकर जला दिया और कन्या को समझाकर सब अपने-अपने घरों को चले गये और कन्या ने धैर्य धारण कर, यथा शक्ति खर्च करके, अपने पिता और्ध्वदैहिक क्रिया की।

नवाँ अध्याय

सूत जी कहने लगे कि इसके बाद नारद जी विस्मय युक्त हो मेधावी ऋषि की कन्या का वृतान्त पूछने लगे। नारद जी ने पूछा-हे प्रभो! फिर उस ऋषि कन्या ने वन में क्या किया, क्या किसी ऋषि ने उसके साथ विवाह किया? नारायण

कहने लगे-इस कन्या ने दुःख के साथ अपने पिता का स्मरण करते हुए वहाँ आश्रम में रहकर कुछ काल व्यतीत किया। भाग्यवश एक दिन उस वन में अपनी इच्छा से विचरण करते महाकोप वाले दुर्वासा मुनि आ गये। आश्रम में मुनि को आता हुआ देखकर शोक सागर में डूबी हुई उस कुमारी ने उठकर, धीरज धारण करके मुनि के चरणों में नमस्कार किया। नमस्कार करके मुनि को अपने आश्रम में लाई। अर्घ्य, पाद्य और वन के नाना प्रकार के फलों से आदर करके मुनि का पूजन किया। फिर मुनि कन्या आदर से कहने लगी-हे मुने! आप को नमस्कार है। मुझ दुर्भागिनी के आश्रम में आपका कैसे आना हुआ? आपके आने से मेरे भाग्य का उदय हो गया।

अथवा मेरे पिता के पुण्य प्रताप से मुझको समझाने के लिए आप आये हैं। आप जैसे महात्माओं के तीर्थरूपी पाँवों के रजकण को स्पर्श कर मेरा जन्म सफल हो गया जो आप जैसे महात्माओं का मुझको दर्शन हुआ।

इस प्रकार कहकर यह बाला उनके आगे चुपचाप होकर बैठ गई, तब दुर्वासा मुनि कुछ हँसकर बोले-धन्य धन्य हे ब्राह्मण पुत्री! तुमने अपने पिता के कुल का उद्धार कर दिया है। कन्या बोली-हे मुनि! आपके वचनों को सुनकर मेरा दुःख दूर हो गया। हे मुने! आप कृपा कर ऐसा उपाय बतलावे जिससे मेरा दुःख दूर हो मैं दुःख शोक में अग्नि की ज्वाला में जल रही हूँ इसको शीघ्र बुझाओ। मेरे हर्ष उपजाने वाला

और कोई नहीं दिखाई देता, मुझको धैर्य देने वाली न तो मेरी माता है, न पिता, न भाई। मैं दुःख पीड़ित किस प्रकार जीवन निर्वाह करूँ? जिस दिशा को देखती हूँ वहीं अन्धकार दिखाई देता है। अतः हे तपोनिधे! मेरे दुःख को दूर करने का उपाय जल्दी करिये। ऐसा कहकर वह बाला उनके आगे बैठ गई। दुर्वासा मुनि उसके उपाय के वास्ते सोचने लगे। श्री नारायण कहने लगे-हे नारद! इस प्रकार मुनि कन्या के वचनों को सुनकर मुनि दुर्वासा विचार कर, अत्यन्त कृपा करके इस बाला को देखकर कुछ हितकारक वचन बोले।

दसवाँ अध्याय

ऋषि कहने लगे-हे सुन्दरी! अब से तीसरा मास पुरुषोत्तम आयेगा, उसमें

स्नान करने से मनुष्य दोषों से छूट जात
है। इसके तुल्य कार्तिकादि कोई भी मास
नहीं है। सब मास तथा पक्ष और भी जे
पर्व हैं पुरुषोत्तम मास की सोलहवं
कला के बराबर भी नहीं है। बारह हजा
वर्ष गंगा में स्नान करने से जो फल
मिलता है और सिंह के बृहस्पति मे
गोदावरी गंगा में स्नान करने से जो फल
मिलता है, वही फल कहीं भी पुरुषोत्तम
मास में एक बार स्नान करने से प्राप्त हो
जाता है। यह श्रीकृष्ण का प्रिय मास
है। इसमें स्नान, दान, जपादि करने से
सब मनोवाँछित फलों की प्राप्ति होती
है इसलिये तुम भी पुरुषोत्तम मास की
सेवा करो।

मुनिराज कन्या को ऐसे वचन कहकर
चुप हो गये। श्रीकृष्ण कहने लगे- हे

अर्जुन! मुनि के वचन सुनकर, भावों से प्रेरित होकर वह मूढ़ बाला क्रोधित होकर बोली-हे ब्राह्मन्! मुझको आपके वचन ठीक नहीं लगे। माघादि मास किस प्रकार थोड़ा फल देने वाले हैं और कार्तिकादि मास को कैसे कम कहते हो? क्या सेवा किया हुआ वैशाख मास इच्छित फल नहीं देता? यह तो मलमास सब कर्मों में निंदित है। हे मुने! सूर्य संक्रांति से रहित मलमास को आप कैसे श्रेष्ठ कह सकते हैं? इस प्रकार क्रोध से कहे गये ब्राह्मण की पुत्री के वचनों को सुनकर, ऋषि का शरीर जलने लगा और क्रोध से नेत्र लाल हो गये। परन्तु फिर भी मित्र की कन्या को श्राप नहीं दिया और सोचने लगे कि कन्या मूर्ख हैं, अपने हित अहित को नहीं जानती पुरुषोत्तम

का महात्म्य जो बड़े-बड़े ज्ञानी भी नहीं जानते तो कम बुद्धि वाले पुरुष और कन्यायें कैसे जान सकती हैं और यह बिना पिता की कन्या, दुःख रूपी अग्नि से सुलगती हुई, मेरे अत्यन्त उग्र श्राप को कैसे सहन कर सकेगी। ऐसे उत्पन्न हुए क्रोध को दूर करते हुए और स्वस्थ होकर व्याकुल कन्या से कहने लगे-तू दुःखी और नादान है, इसलिये तेरे पर मेरा कुछ भी कोप नहीं, जैसा तेरे निर्भाग्य मन में हो वैसा ही कर और भी जो कुछ होने वाला है सो सुन। मैं कहता हूँ, तूने जो पुरुषोत्तम मास का अनादर किया है, इसका फल इस जन्म या अगले जन्म में अवश्य होना चाहिए। क्योंकि तेरा पिता मेरा मित्र था इसलिये तुझको श्राप नहीं देता हूँ कि तू बालक है और

अपने शुभ तथा अशुभ को नहीं पहचानती। तेरा कल्याण हो, मैं तो नारायण की सेवा में जाता हूँ।

श्रीकृष्ण कहने लगे कि ऐसा कहकर वह महाक्रोधी तपस्वी मुनि झटपट चले गये और उसी क्षण वह कन्या पुरुषोत्तम के प्रभाव से कान्तिहीन हो गई और अपने मन में विचार करने लगी कि तत्काल फल देने वाले पार्वती पति श्री शंकर की आराधना करूँगी। ऐसा निश्चय करके अपने आश्रम में जाकर वह कठिन तप करने की इच्छा करने लगी। सूत जी कहने लगे-वह बाला प्रबल मुनि के वचनों को निंदित कर तथा बहुत फल वाले विष्णु और सावित्री पति ब्रह्मा को छोड़कर अपने वन आश्रम में केवल शंकर भगवान की सेवा करने लगी।

ग्यारहवाँ अध्याय

नारद जी कहने लगे-हे मुने! सब मुनियों से भी कहा कठिन ऐसा कौन-सा तप उस कुमारी ने किया सो हमसे कहिये। श्री नारायण कहने लगे वह बाला सनातन शिव का अत्यन्त उग्र तप करने लगी। जिनके सर्पों के आभूषण, नंदी भृंगी से सेवित चौबीस तत्त्वों और तीनों गुणों से स्तुति किये गये महा आठो सिद्धियों और प्रकृति जटा मुकुट से शोभित, भाल में अर्ध चन्द्र, ऐसा शिव को उद्देश्य करके वह बाला ग्रीष्म ऋतु के सूर्य में पंचाग्नि में स्थित हो दुष्कर तप करने लगी। हेमन्त तथा शिशिर ऋतु में ठंडे जल में स्थित मुख जल के ऊपर इस प्रकार दिखाई देती रही जैसे जल के ऊपर कमल शोभायमान होता है।

उसका ऐसा उग्र तप देखकर इन्द्र महा चिन्ता को प्राप्त हो गया। हे अर्जुन! सब देवताओं को और महा ऋषियों को सराहने योग्य, ऐसे उग्रतप में प्रवृत्त हुई ऋषि कन्या को नौ हजार वर्ष बीत गये। फिर पार्वती पति शंकर ने इसके तप से प्रसन्न होकर अपना अगोचररूप दिखाया। उस रूप को देखकर वह कन्या झटपट खड़ी हो गई, मानो उसके देह में प्राण आ गये, तप से उसका शरीर जो दुर्बल हो गया था, मानो हृष्ट-पुष्ट हो गया। उस बाला ने नम्र होकर श्री शंकर को नमस्कार किया और विश्ववंदित श्री शिव का मानसोपचार से पूजन किया और उनकी स्तुति करने लगी।

हे राजन्! जब उस मेधावी ऋषि की

तपस्विनी कन्या श्रीशंकर भगवान की स्तुति करके शान्त हुई। तब महा उग्र तप से उसका किया हुआ स्तोत्र सुनकर प्रसन्न मुख वाले श्री सदा शिव भोले-हे तपस्विनी! तेरा कल्याण हो। मनवांछित वर माँग! महा आनन्द में मग्न कुमारी, ऐसा सुनकर प्रसन्न हुए शिव जी से यह वचन बोली-हे दीनानाथ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हो तो मुझको पति दीजिये ऐसा ही वह पाँच बार कहकर शान्त हो गई। तब शिवजी मुनि कन्या को कहने लगे कि हे बाला! तूने जो अपने मुख से कहा है वैसा ही होगा, तूने पाँच बार पति माँगा है सो हे सुन्दरी तेरे पाँच पति होंगे-श्रीकृष्ण कहने लगे-श्रीशिव के ऐसे अनीति प्रिय वचन सुनकर बाला बोली-हे सदाशिव! एक

स्त्री के एक ही पति हो सकता है। कहीं भी स्त्री पाँच पतियों वाली न देखी न सुनी। एक पुरुष के पाँच स्त्री तो हो सकती हैं मैं पाँच पतियों वाली कैसे होऊँगी। आपको ऐसा कहना योग्य नहीं है प्रभो! ऐसा वरदान देने से आपको ही लज्जा होगी! उस कन्या के ऐसे वचन सुन कर श्री शिव कहने लगे कि इस जन्म में नहीं अगले जन्म में होंगे। वहाँ तू तपोबल से योनि से उत्पन्न नहीं होगी और वहाँ अग्नि से उत्पन्न सुख हो प्राप्त होकर परम पद को प्राप्त होगी। दुर्वासा मेरा ही रूप है, तूने उनका तिरस्कार किया, यदि दुर्वासा कोपायमान हो जाए तो तीनों लोकों को जला देवें। तूने अत्यन्त ब्रह्म तेज का तिरस्कार किया और तूने भगवान के प्रिय पुरुषोत्तम मास

का व्रत नहीं किया जिसको श्रीकृष्ण भगवान ने सब ऐश्वर्य सौंप दिया। हे बाले! मैं, ब्रह्मादिक देवता और नारदादिक तपस्वी जिन भगवान जी की आज्ञा नहीं टाल सकते, तूने उनको नहीं पूजा और अनादर किया। इसलिये तेरे पाँच पति होंगे। हे बाले! जो पुरुषोत्तम मास की निंदा करते है वह घोर नरक में जाता है। उसके विपरीत कभी भलाई नहीं हो सकती। जो पुरुषोत्तम के भक्त है वह पुत्र, पौत्र और धन से युक्त हैं। इस लोक तथा परलोक की सिद्धि को प्राप्त होते हैं। हम सब देवता भी पुरुषोत्तम की सेवा करते हैं। इस प्रकार कहकर श्री नीलकण्ठ महादेव तत्काल अन्तर्ध्यान हो गये। तब वह बाला चकित रह गई। सूत जी कहने लगे-हे ऋषियों!

सदाशिव के अन्तर्ध्यान होने से उस कन्य
को भी चिन्ता हो गई।

बारहवाँ अध्याय

शंकर के चले जाने पर, वह बाल
कांतिहीन श्वास लेती हुई भयभीत होक
आँखों में आँसू लाकर रोने लगी। इसं
प्रकार दुःख से बहुत सा काल व्यती
हो गया। फिर वह तपस्विनी भी बलवा
काल के वश हो गई। उसी समय ब
धर्मात्मा राजा द्रुपद ने उत्तम यज्ञ किया
उस यज्ञ कुण्ड में से एक कन्या उत्पन
हुई। वही मेधावी ऋषि की कन्या दूस
जन्म में राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी ना
से संसार में विख्यात हुई। सो यह राज
द्रुपद के स्वयंवर में मछली की आँख
बीधने पर अर्जुन को मिली। हे नारद
पुरुषोत्तम का अनादर करने से दुष

दुःशासन ने इसके बालों को पकड़कर खींचा। परंतु उस समय वह बारम्बार मेरे नामों को याद करने लगी। श्रीकृष्ण कहने लगे कि यदि द्रोपदी को मैं भूल ही गया था, तो भी मेरे को स्मरण आई और हे राजन्! मैं तत्काल ही गरुड़ पर चढ़कर आया और अनेक प्रकार से खींचे हुए चीर को इतना बढ़ाया कि दुःशासन उसको खींचता हुआ अचेत होकर गिर गया। सदैव मेरे से स्नेह करने वाली और पतिव्रता को पुरुषोत्तम मास के अनादर से मैंने भी उसको त्याग दिया। पुरुषोत्तम मास का तिरस्कार करने वाली को मैं भी त्याग देता हूँ। इसलिये सब प्रकार से पुरुषोत्तम मास, ऋषियों और देवताओं के भी सेवन योग्य है। फिर मनुष्यों को तो अत्यन्त ही मनवांछित

फल देने वाला है। इसलिए आने वाले पुरुषोत्तम मास की अराधना करो, चौदह वर्ष पूरे हुए। अब सब कुछ अच्छा ही होगा। श्री नारायण कहने लगे इस प्रकार श्री कृष्ण द्रोपदी और पांडवों को समझाकर द्वारिकापुरी जाते हुए बोले हे राजन! अभी विरह से व्याकुल द्वारिकापुरी को मैं जा रहा हूँ। ऐसा कहने पर भगवान प्रेम में मग्न हो पांडु पुत्रों को धीरे-धीरे लौटाकर द्वारिकापुरी को चले गये। श्रीनारायण बोले-श्री द्वारिकानाथ के द्वारिका जाने पर युधिष्ठिर अपने भाइयों सहित तप करते हुए तीर्थों में विचरने लगे। हे नारद! श्रीभगवान के प्रिय पुरुषोत्तम मास को मन में धारण कर और श्रीकृष्ण का वचन स्मरण कर अपने भाइयों और द्रोपदी-से बोले-

अहो! आप सबने पुरुषोत्तम का महात्म्य सुना है। पुरुषोत्तम को बिना पूजे कोई कैसे सुखी रह सकता है? इस लोक में वही पूज्य, वही धन्य और वही श्रेष्ठ है जो अनेक प्रकार से भगवान् पुरुषोत्तम की पूजा करता है। इस प्रकार सब तीर्थों में विचरते हुए पुरुषोत्तम मास के प्राप्त होने पर विधिवत् उसका व्रत करने लगे और चौदह वर्ष व्यतीत हो जाने पर श्रीकृष्ण भगवान की कृपा से अकंटक राज्य को प्राप्त हुए। इसी प्रकार सूर्यवंशी राजा दृढ़धन्वा भी पुरुषोत्तम के सेवन से पुत्र और पौत्रों तथा अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर, योगियों को भी अति दुर्लभ भगवान के लोक गये।

तेरहवाँ अध्याय

ऋषि कहने लगे कि हे सूत जी! राजा दृढ़धन्वा को पुरुषोत्तम के सेवन से राज्य, पुत्र, पौत्र और पतिव्रता स्त्री कैसे मिली और योगियों को अति दुर्लभ भगवान का लोक कैसे प्राप्त हुआ? इसलिये, आप विस्तार से इस इतिहास को कहिये। सूत जी कहने लगे-हे ऋषियों! आकाश गंगा की तरह पवित्र करने वाली सुन्दर पुरानी दृढ़धन्वा की कथा मैं तुम से कहता हूँ। हैहय देश का चित्रधन्वा नाम से विख्यात राजा हुआ। उसका पुत्र महातेजस्वी, सब गुणों से युक्त सत्य बोलने वाला, धार्मिक दृढ़धन्वा नाम से विख्यात हुआ। वह दृढ़धन्वा अंगों सहित चारों वेदों को पढ़कर, विधि पूर्वक गुरुजी की पूजा

कर, दक्षिणा देकर पिता के नगर को
गया। अपने नगर के रहने वालों को नेत्रों
का आनन्द उत्पन्न करते हुए उसने अपने
पिता चित्रधन्वा को प्रसन्न किया। अब
राजा चित्रधन्वा अपने मन में विचार
करने लगा कि स्त्री, घर, पुत्रादि छोड़कर
मुझको भी वन में जाकर हरि का भजन
करना चाहिए। ऐसा मन में विचार कर
समर्थ राजा दृढ़धन्वा को सब राजपाट
सौंपकर विरक्त होकर पुलह ऋषि के
आश्रम को चला गया। वहाँ जाकर तप
करने लगा। कितने ही काल तक तप
करके चित्रधन्वा हरि के धाम को चला
गया। दृढ़धन्वा ने जब अपने पिता की
मृत्यु को सुना तब अपने पिता की
और्ध्वदैहिक क्रिया की। फिर नगर में
राज्य करने लगा। राजा दृढ़धन्वा की

गुणसुन्दरी नाम की स्त्री थी। उसके चार
पुत्र हुए और चारुमती नाम की एक
कन्या उत्पन्न हुई। उसके पुत्र चित्रवाक्,
चित्रवाह, मणिमान और चित्रकुण्डल
नामों से विख्यात हुए।

श्री नारायण कहने लगे कि एक
समय सोते हुए उस राजा के मन में यह
विचार उत्पन्न हुआ कि मेरा यह सब
वैभव किस पुण्य के प्रभाव से हुआ? न
मैंने कोई तप किया, न दान दिया, न
कुछ हवन किया। अपने इस भाग्य का
कारण किससे पूछूँ? राजा की इसी
विचार में सारी रात्रि व्यतीत हो गई। प्रातः
ब्रह्म मुहूर्त में उठकर यथा विधि स्नानादि
करके, खड़ा होकर, उदय होते हुए सूर्य
को अर्घ्य देकर ब्राह्मणों को दानादि
देकर और नमस्कार करके वह राजा

घोड़ पर चढ़कर तत्काल शिकार के लिए वन में गया। वहाँ उसने शिकार किया, उसी वन में राजा दृढ़धन्वा के बाण से घायल होकर एक मृग दूसरे वन में भाग गया। घायल मृग के शरीर से गिरते हुए रुधिर के निशानों से राजा दृढ़धन्वा भी उसके पीछे-पीछे गया, पर थोड़ी देर में मृग राजा की निगाह से ओझल हो कर कहीं छिप गया। राजा ने प्यास से व्याकुल होकर फिरते-फिरते, सागर के समान एक सरोवर को देखा। वहाँ पर तत्काल जाकर उसने पानी पिया, वहीं उसने अत्यन्त घनी छायावाला बट का वृक्ष देखा। उसकी जटा में घोड़े को बाँध कर राजा वहाँ पर बैठ गया। वहाँ पर वाणी बोलता हुआ तोता आया। राजा को अकेले बैठा हुआ देखकर वह शुक

बार-बार एक ही श्लोक बोलता रहा "तू पृथ्वी में अत्यन्त सुख को देखकर सार वस्तु को नहीं विचारता, तो कैसे पार पहुँचेगा?" ऐसे उसके इन रहस्य पूर्ण वचनों को सुनकर राजा को यही सोच हुआ कि बारम्बार यह शुक ऐसे वचन क्यों कहता है, क्या वह शुकदेव जी हैं? मुझ मूढ को संसार सागर में डूबे हुए देख कर, मुझको श्रीकृष्ण का भक्त समझकर मुझ पर कृपा करके उद्धार करने को आये हैं? वह इसी विचार में था कि पीछे से उसकी सेना आ गई। वह तोता तो राजा को उपदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गया और राजा अपने नगर में शुक के वाक्यों को स्मरण करता रहा।

चौहदवाँ अध्याय

श्री नारायण बोले-राजा इसी प्रकार चिन्ता ग्रस्त रहता था कि एक समय बाल्मीकि ऋषि उसके यहाँ आये। राजा ने जल्दी से उठकर भक्ति सहित उनके चरणों में नमस्कार किया। तब बाल्मीकि ऋषि राजा को शान्त देखकर, कहने लगे-हे राजन्! तेरे मन में जो कुछ भी चिन्ता हो, वह तुम बिना संकोच कहो, क्या बात है? दृढ़धन्वा ने कहा-महाराज! आपके चरणों की कृपा से सब सुख है, परन्तु हे ब्राह्मण एक बड़ा भारी संदेह मेरे मन में है, सो उस वन के तोते के मुख से लगे हुए शूल को आप दूर करिये। बाल्मीकि ऋषि राजा के यह वचन सुन कर बोले-हे राजन्! पूर्व जन्म में तुम द्रविड़ देश में ब्राह्मण के घर में

त्रामपर्त्र के किनारे उत्पन्न हुए थे। सदेव तुम्हारा नाम था। तुम धार्मिक, सत्यवादी, जितना मिले उतने ही में सन्तुष्ट रहने वाले थे। तुम्हारी स्त्री उत्तम गुणों वाली गौतम ऋषि की पुत्री गौतमी नाम से विख्यात थी। गृहस्थाश्रम के धर्म में चलने वाले सुदेव को कितना ही काल व्यतीत हो गया, परन्तु उनके सन्तति नहीं हुई। एक दिन आसन पर बैठा हुआ, अपनी स्त्री से सेवा कराता हुआ, थका हुआ वह ब्राह्मण कहने लगा–हे सुन्दरी! संसार में पुत्र से परे कोई सुख नहीं, क्योंकि तप, दान से उत्पन्न पुत्र परलोक में सुख देते हैं, शुद्ध वंश में उत्पन्न हुई सन्तति, इस लोक और परलोक में सुख देती है। उस श्रेष्ठ सन्तति को मैं प्राप्त न कर सका तो मेरा जीना ही वृथा है। मैंने

उसे वेदाध्ययन नहीं कराया। न उसका विवाहादि किया। अतः मेरा जन्म बृथा है। इसलिये मेरी मृत्यु शीघ्र ही हो जाये तो अच्छा है, मुझको आयु प्रिय नहीं।

इस प्रकार अपने पति के वचनों को सुनकर उस सुन्दरी के मन में अत्यन्त दुःख हुआ और बोली-हे प्राणेश्वर! ऐसे तुच्छ वाक्य मत कहो। तुम्हारे जैसे वैष्णव शूरवीर कभी निराश नहीं होते। हे विप्र! आप सत्य धर्म में तत्पर रहें, आपने तो स्वर्ग जीता है। पुत्र की इच्छा है तो हरि जगन्नाथ की आराधना करो। वह ब्राह्मण श्रेष्ठ अपनी धर्मपत्नी के ऐसे वचन सुनकर, निश्चय के साथ तामपर्णी नदी के किनारे चला गया। वहाँ जाकर पुण्य तीर्थ में स्नान कर महा भयंकर तप करने लगा। ऐसे उस तपोनिधि के

चार हजार वर्ष बीत गये। हे ब्राह्मण! उसके तप से त्रिलोक काँप उठे। सुदेव का महा उग्र तप देखकर बड़े वेग से गरुड़ पर चढ़कर भक्त वत्सल श्री भगवान् प्रकट हुए। श्री नारायण बोले हे नारद जी! नवीन मेघ के समान, चतुर्भुज, जगत के पालन करने में समर्थ, उन मुरारी के आनन्दित मुख को देखकर, बड़े हर्ष के साथ, सुदेव ब्राह्मण ने मुकुन्द को साष्टांग नमस्कार किया।

पन्द्रहवाँ अध्याय

बाल्मीकि ऋषि कहने लगे इस प्रकार विष्णु की स्तुति कर ब्राह्मण सुदेव हरि के आगे बैठ गया। तब भगवान् ऐसी स्तुति सुन, मेघ के समान गम्भीर वाणी बोले-हे वत्स! तुमने बड़ा घोर तप किया है, इसलिये जो इच्छा हो वर माँगो। सुदेव

बोला-हे नाथ! जो आप प्रसन्न हुए हैं तो मुझको एक श्रेष्ठ पुत्र दीजिये। इस प्रकार ब्राह्मण के वचन सुनकर श्री भगवान् बोले-हे वत्स! पुत्र का सुख विधाता ने तेरे भाग्य में नहीं लिखा। मैंने तेरे भाग पट्ट के सब अक्षर देखे हैं, परन्तु सात जन्मों में भी तुझे बेटे का सुख नहीं है। भगवान् के ऐसे बज्र प्रहार जैसे निष्ठुर वचन सुनकर, जड़ से कटे हुए वृक्ष की तरह वह ब्राह्मण पृथ्वी पर गिर पड़ा।

गौतमी अपने पति को इस प्रकार पड़े हुए, देखकर अत्यन्त दुःखी हुई और स्वामी को पुत्र के सुख से रहित देखकर रोने लगी। फिर वह स्त्री धैर्य धारण कर, अपने पड़े हुए पति से इस प्रकार बोली-हे नाथ! धीरज धारण कीजिए, उठो जो

विधाता ने ललाट में लिख दिया है वह सुख अथवा दुःख अवश्य ही भोगना पड़ेगा। इस प्रकार उस स्त्री के तीव्र शोक से युक्त वचन सुनकर, उत्पन्न दुःख से काँपता हुआ गरुड़ विष्णु भगवान् से कहने लगा-हे हरे! आप इस शोक सागर में डूबी हुई ब्राह्मणी को देखिये और गिरते हुए आँसुओं से व्याकुल ब्राह्मण को देखिये। हे दीनबन्धो! आपकी भक्तों के दुःखों को न सहने वाली दया कहाँ गई? तब श्री नारायण गरुड़ से इस प्रकार अमृत समान वचन बोले-हे गरुड़! इस ब्राह्मण को एक मनोगत पुत्र शीघ्र दूँगा। इस प्रकार हरि के अनुकूल वचन सुनकर, गरुड़ ने अति प्रसन्न होकर, उस ब्राह्मण को अति सुन्दर अनुरूप पुत्र दिया।

सोलहँवा अध्याय

बाल्मीकि कहने लगे-इस प्रकार अनुपम वर देकर, दोनों स्त्री-पुरुषों के देखते-देखते विष्णु भगवान गरुड़ पर चढ़कर अपने स्थान को चले गये। कुछ समय व्यतीत होने पर गौतमी के पुत्र उत्पन्न हुआ और सुदेव ने पुत्र के पैदा होने पर अति प्रसन्नता के साथ श्रेष्ठ ब्राह्मणों को बुलाकर जाति कर्म किया और स्नान कर ब्राह्मणों को बहुत सा दान दिया। पिता के मनोरथ के साथ, माता के मन को आनन्द देने वाला वह पुत्र शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा। तब पिता ने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार कराकर गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया और वह पुत्र ब्राह्मचर्य व्रत का पालन करने लगा।

बाल्मीकि ऋषि कहने लगे-एक समय करोड़ों सूर्य के समान कान्ति वाले देवल ऋषि वहाँ पर आये। उनको देखकर सुदेव ने उनके लिये आसन बिछाया। उस आसन पर देवल मुनि बैठकर बोले-हे सुदेव! समस्त शुभ लक्षणों से युक्त यह तुम्हारा पुत्र महा भाग्यावन है। परन्तु इसमें एक ही दोष है। जिससे इसके सब गुण बृथा हो जाते हैं। हे सुदेव! तेरा यह पुत्र बारहवें वर्ष में जल में डूबकर मर जायेगा, जिससे तू मन में सोच नहीं करना। अवश्य होने वाला तो होगा ही, इसमें कोई शंसय नहीं है। इसका कोई उपाय नहीं है।

बाल्मीकि जी कहने लगे देवल ऋषि के ऐसे वचन सुनकर, सुदेव शर्मा पृथ्वी पर गिर पड़े और देवल मुनि इतना

कहकर ब्रह्मलोक को चले गये और सुदेव देवल मुनि के वचनों का स्मरण कर बहुत काल तक विलाप करते रहे। फिर गौतमी पुत्र को गोदी में लेकर, प्रेम से मुख चूमकर अपने पति से बोली-हे द्विजराज! होने वाली वस्तु से भय नहीं करना चाहिये जो होने वाला है सो तो होगा ही और जो नहीं होने वाला है वह कभी नहीं होगा। इसलिये हे नाथ! उठो! और सब शरणागत जीवों के रक्षक निर्वाण पद को देने वाले भगवान् विष्णु का भजन करो। बाल्मीकि ऋषि कहने लगे इस प्रकार सुदेव ब्राह्मण अपने स्त्री के वचन सुनकर, सतगुण को प्राप्त हुआ और हृदय में हरि के चरण कमल को धारण कर अपने पुत्र से उत्पन्न दुःख को तत्काल त्याग दिया।

सत्रहवाँ अध्याय

एक दिन उनका पुत्र शुकदेव अपने मित्रों सहित बाबड़ी में स्नान करने गया और अपने मित्रों सहित जल में प्रवेश करके नहाने लगा और जल में डूबकर मर गया। तब उसको जल से बाहर न आते देख उसके साथी हा-हाकार करते हुए भागे और उन बालकों ने गौतमी को जाकर सब वृतान्त सुनाया। उन बालकों की यह अप्रिय वाणी को सुनकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ी। इतने में सुदेव भी वन से आ गया और पुत्र का मरण सुन कर कटे हुए वृक्ष की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ा दोनों स्त्री-पुरुष उठकर बाबड़ी पर गये वहाँ मरे हुये पुत्र को आलिंगन कर, शरीर को गोदी में लेकर सुदेव शर्मा बारम्बार हा-हाकार

करने लगा। गोदी में पड़े हुए मृत पुत्र को देखकर रोने लगा और विलाप करते हुए कहने लगा–हे पुत्र! मेरी सोच हरने वाली मनोहर वाणी को और मेरे मन को आनन्द दो। तुम अपने वृद्ध माता-पिता को छोड़कर जाने के योग्य नहीं हो। हे वत्स! तुम्हारे श्रेष्ठ मित्र वेद पढ़ने के लिए बुला रहे हैं। तुम्हारा उपाध्याय पढ़ने के लिये बुला रहा है। तुम इस समय कैसे सो रहे हो? मैं तुम्हारे बिना नहीं जीऊँगा, न ही घर जाऊँगा। अब मेरा वन में भी क्या काम है? ऐसा कहते-कहते भगवान के नामों का उच्चारण करने लगा।

अठारहवाँ अध्याय

इस प्रकार उस ब्राह्मण के विलाप को सुनकर दसों दिशाओं में गरजता हुआ

मेघ बादल आया। उस मेघ से पर्वतों को कंपायमान करता हुआ, तीक्ष्ण स्पर्श करता हुआ, बड़े वेग से वायु चलने लगी और अत्यन्त जोर से वहाँ बिजली चमकने लगी और मेघ शब्द से चारों दिशायें पूरित हो गईं। इस प्रकार एक मास तक ऐसा जल बरसा कि सारी पृथ्वी जल से भर गई, परन्तु पुत्र शोक की अग्नि से तपे हुए उस ब्राह्मण को कुछ भी मालूम न हुआ, न उसने पानी पिया न भोजन किया। पुनः-पुनः इस प्रकार पुकारते हुए ही उसको सारा मास व्यतीत हो गया। वह मास श्रीकृष्ण भगवान का प्रिय पुरुषोत्तम मास था सो अनजाने में ही उस ब्राह्मण से पुरुषोत्तम मास की सेवा हो गई। जिससे अत्यन्त प्रसन्न होकर, श्रीकृष्ण भगवान प्रकट हो गये। उस समय मेघ बरसना बन्द हो

गया। फिर उस ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण भगवान् को देखकर शीघ्र पुत्र को पृथ्वी पर रखकर स्त्री सहित श्रीकृष्ण भगवान् को दण्डवत् नमस्कार किया और हाथ जोड़कर श्रीकृष्ण भगवान के आगे बैठ गया। अनजाने में पुरुषोत्तम मास के सेवन से प्रसन्न होकर भगवान् अमृत वाणी से बोले-हे सुदेव! तुम धन्य हो और अत्यन्त भाग्यवान हो। जो कुछ होने वाला है सो सुनो, मैं कहता हूँ। हे ब्राह्मण! तेरे इस पुत्र की बारह हजार वर्ष की आयु होगी। हे द्विजोत्तम! तुम को सुख देने वाला होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। मैंने प्रसन्न होकर तुझको पुत्र दिया।

नारायण कहने लगे-हे नारद! भगवान् के इतना कहने पर, वह ब्राह्मण

पुत्र जीवित होकर उठ बैठा और ब्राह्मण और उसकी स्त्री दोनों ही पुत्र को देखकर महा आनन्दित हुए और देवता भी पुष्पों की वर्षा करने लगे। शुकदेव ने उन दोनों माता-पिता तथा श्रीहरि को नमस्कार किया और गरुड़ भी पुत्र सहित ब्राह्मणों को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। तब ब्राह्मण आश्चर्य युक्त होकर श्रीहरि को नमस्कार कर, हाथ जोड़कर गद्गद् वाणी से संशय काटने के लिये आनन्द सहित भगवान से पूछने लगे-भगवान्! मेरे चार हजार वर्ष तक निरन्तर महाकठिन तप करने पर आपने जो कठोर वचन मुझसे कहे थे कि मेरे सात जन्मों में भी पुत्र का सुख नहीं है, उस वाक्य के उल्लंघन हेतु और मरे हुए पुत्र को जीवित करने का कारण क्या है?

उन्नीसवाँ अध्याय

नारायण जी ने कहा-हे नारद! भक्त वत्सल भगवान् अपनी वाणी से सुदेव ब्राह्मण को प्रसन्न करते हुए बोले-हे द्विजराज! जिससे मैं प्रसन्न हुआ क्या यह तुम नहीं जानते? मेरा प्रिय पुरुषोत्तम मास आने पर तुम दोनों स्त्री-पुरुषों ने उपवास कर यहाँ बैठने से पुरुषोत्तम मास की सेवा हुई।

एक बार वेद में कहे गये साधनों को और दूसरी ओर पुरुषोत्तम मास के सेवन को जब ब्रह्मा जी तोलने लगे तो वेदोक्त साधन बहुत हल्के निकले और पुरुषोत्तम मास सेवन व्रत भारी हुआ। इसीलिये संसार में पुरुषोत्तम मास अधिक पूज्य और मान्य है। जो मनुष्य का जन्म लेकर श्री पुरुषोत्तम मास में

जप, तप, स्नान, दानादि नहीं करते हैं वे जन्म-जन्मान्तर में दरिद्र होते हैं। अतः सब प्रकार से यत्न करके, मेरे प्रिय पुरुषोत्तम मास का सेवन करना चाहिये। जो पुरुषोत्तम की सेवा करेगा, वह भाग्यवान धन्य होकर मुझको प्राप्त होगा।

श्री नारायण बोले-इस प्रकार, हे मुने! जगदीश्वर कृष्ण भगवान् ऐसा कहकर, तत्काल गरुड़ पर चढ़कर, अत्यन्त पवित्र बैकुण्ठ लोक को चले गये। स्त्री सहित सुदेव ब्राह्मण मृत प्राय होकर फिर जीवित हो गए और शुकदेव को देखकर रात-दिन अत्यन्त हर्षित होते रहे और कहने लगे कि यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि ऐसा मास कहीं भी न देखा न सुना। इस प्रकार आश्चर्य युक्त होकर

वह सुदेव ब्राह्मण अत्यन्त श्रद्धायुक्त होकर पुरुषोत्तम मास का सेवन करने लगा।

ऋषि बाल्मीकि कहते हैं वहीं तुम राजा दृढ़धन्वा विख्यात हुए। हे राजन्! पुरुषोत्तम मास के सेवन से सम्पूर्ण ऋषियों के भोगने वाले हुए। हे राजन्! जो तुमने मुझसे पूछा था सो मैंने सब तुमको बतलाया और पूर्व जन्म में जो शुकदेव तुम्हारा पुत्र था वही तोता था। हरि ने उसको जिलाया और शुकदेव नाम से विख्यात हुआ। वह शुकदेव बारह हजार वर्ष तक आयु भोगकर बैकुण्ठ को गया। वही शुकदेव वन के सरोवर में बड़ के वृक्ष पर बैठकर संसार सागर में डूबे हुए विषय रूपी सर्प से तुम जो, अपने पूर्व जन्म के पिता को

देखकर कृपा से युक्त हो चिन्तन करने लगा कि यदि मैं इस राजा को बोध नहीं कराऊँगा तो मेरा भी अपराध हो जायेगा। इस प्रकार मेरा मन श्रुति के वचनों को मानना वृथा हो जायेगा। इसलिये मुझको अपने पूर्व जन्म के पिता का उपकार अवश्य करना चाहिये। ऐसा सोचकर ही, उस तोते ने तुमको ज्ञान दिया।

बीसवाँ अध्याय

सूत जी कहने लगे-नारायण के मुख से दृढ़धन्वा के पूर्व जन्म के वृतान्त को सुनकर नारद जी श्री नारायण से फिर पूछने लगे-हे तपोनिधे! राजा दृढ़धन्वा फिर बाल्मीकि ऋषि को क्या कहने लगे सो आप कृपा करके मुझसे कहिये। श्री नारायण बोले-हे नारद! राजा दृढ़धन्वा बाल्मीकि ऋषि से कहने लगा-हे मुने!

यह मोक्ष देने वाला पुरुषोत्तम मास व्रत कैसे करना चाहिये और किसकी पूजा करनी चाहिये और इसकी विधि क्या है सो आप कृपा करके सब लोगों के हित के लिये मुझसे कहिये।

बाल्मीकि मुनि बोले–हे राजन्! ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ईश्वर का चिन्तन कर शौचादि जाये। फिर स्नान प्राणायाम करके संध्यावन्दन करें। जब तक सूर्य का दर्शन न हो गायत्री का जप करते रहें फिर सूर्य मन्त्रों से सूर्य को अर्घ्य देवे और सायंकाल अपने पैरों तथा भूमि को नमस्कार करें। फिर "यस्य स्मृत्या" इस मन्त्र से प्रार्थना करें। जो ब्राह्मण श्रद्धा से विधिपूर्वक संध्या करता है उसको तीनों लोकों में कुछ भी कठिन नहीं है। यह सब कृत्य दिन में पूर्व भाग का है।

इस प्रकार नित्य कर्म करके हरि का पूजन आरम्भ करें फिर स्त्री-पुरुष शुद्ध हो वाणी को एकाग्र करके, शुद्ध गोल व चौकोर गोबर से लिपी हुई भूमि पर व्रत सिद्धि के लिये चावलों से आठ दल वाला कमल बनावें। फिर स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे या मिट्टी का नवीन छिद्र रहित शुद्ध कलश उस मण्डल के ऊपर स्थापित करें। फिर उस कलश में तीर्थ का जल भर दें। इस प्रकार कलश स्थापन कर उसमें सब तीर्थों का आह्वान करें। गंगा, गोदावरी, कावेरी, सरस्वती, मेरी शान्ति के लिए पापों का नाश करने के लिये आओ। फिर कलश को मन्त्रों से गन्ध, अक्षत, नैवेद्य और ताजे पुष्पों से पूजकर, कलश के ऊपर पीले वस्त्र से लपेटा हुआ, ताँबे का पात्र

रख दें। फिर उस पात्र के ऊपर राधाकृष्ण की मूर्ति स्थापित करें। फिर भक्ति युक्त हो विधि से पूजन करें।

इक्कीसवाँ अध्याय

हरि कहने लगे-हे नारद! फिर प्रतिमा को अग्नि द्वारा शुद्ध करके प्राण प्रतिष्ठा करें, अन्यथा मूर्ति धातु ही रहती है। "तद्विष्णों" ऐसे पुरुषोत्तम के बीज से जैसे ही वेदों के मन्त्र को जानने वाला ब्राह्मण निरन्तण हृदय पर अँगूठा रखकर, इन मन्त्रों से हृदय में प्राण प्रतिष्ठा करे, इस मूर्ति के लिये प्राण रहे या इस मूर्ति के लिये प्राण जायें। इस प्रकार प्रतिमा के देवत्व आने के लिये 'स्वाहा' इस प्रकार यजुर्वेद के मन्त्र पढ़ें। इस प्रकार प्राणों की प्रतिमा में रखकर श्री पुरुषोत्तम भगवान् का ध्यान करें
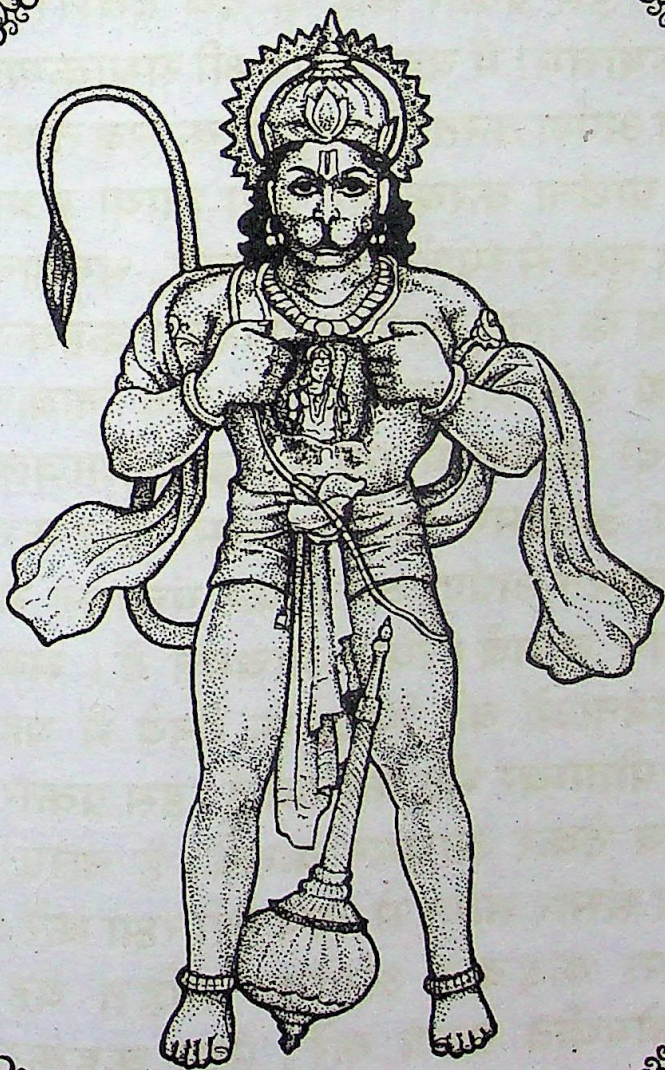
और इस प्रकार कहें–हे देव देवेश! हे
पुरुषोत्तम! मैं यह आसन श्री राधाकृष्ण
को अर्पण करता हूँ। गङ्गादिक सब तीर्थों
से प्रार्थना करके मेरे द्वारा लाया हुआ
यह सुख से स्पर्श करने योग्य है, भगवान्
पाद्य के लिए ग्रहण करो। ऐसा कहकर
पाद्य देवे श्री गंगाजी से जल लाकर
सुन्दर कलश में रखे हुए इस गंगाजल
का आचमन करिये। ऐसा कहकर
आचमन अर्पण करें। फिर पंचामृत से
स्नान करावें। फिर आचमन दें। सब
कामनाओं की सिद्धि के लिये मैं यह
दो पीताम्बर भेंट कर रहा हूँ। इस प्रकार
वस्त्र देकर आचमन करावें। हे नारद!
इस संसार सागर से आप मेरी रक्षा करें।
ऐसा कहकर अंगोछा सहित यह
यज्ञोपवीत ग्रहण करें। ऐसा कहकर

यज्ञोपवीत अर्पण करें। हे श्रेष्ठ! सुगन्धि-युक्त मनोहर दिव्य, चन्दन के विलेपन को प्रीति के लिए ग्रहण करें। ऐसा कहकर भगवान् को चन्दन लगावें। हे पुरुषोत्तम! शोभायमान अक्षतों को ग्रहण करिये, ऐसा कह कर अक्षत चढ़ावे। इस प्रकार के शबदादि चौबीस मन्त्रों से, नाम के अन्त में चतुर्थी विभक्ति लगाकर, प्रत्येक अंग की पूजा करें फिर पुष्पादि ले हर एक-एक वस्तु से पुरुषोत्तम का पूजन करें।

बाईसवाँ अध्याय

राजा कहने लगे कि हे तपोधन! पुरुषोत्तम के व्रत करने वाले को क्या भोजन करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? सब नियम पूर्वक विस्तार से कहिये। बाल्मीकि ऋषि बोले-हे

राजन् पुरुषोत्तम के जो नियम कहे गये
हैं, वह सब नियम मैं संक्षेप में कहता
हूँ, आप सुनिये। पवित्र होकर पुरुषोत्तम
मास में गेहूँ, चावल, मिश्री, मूंग, जौं
तिल, मटर, अदरक, शाक, ककड़ी
केला, सेंदा नमक, दही, घी, मक्खन
आम, हरद, पिप्पल, जीरा, सोंठ, इमली
सुपारी, इलायची, आँवला लेना चाहि
तथा बिना तेल के पकाये हुए यह स
भोजन कहे गये हैं। सब प्रकार
आमिष और माँसादि, बेर, राई, नशे वा
पदार्थ, दाल, तिलों का तेल, लोहे
दूषित, भाव से दूषित, क्रिया से दूषित
शब्द से दूषित, ऐसे अन्नों को त्याग दे
पुरुषोत्तम मास में देव, वेद, ब्राह्मण
गुरु, गौ, व्रत करने वाले, स्त्री, रा
और महात्माओं की निन्दा न करें। अप

शक्ति के अनुसार भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए व्रत भी करें। बाल्मीकि ऋषि कहते हैं–हे राजन्! व्रत करने वाला कार्तिक अथवा माघ मास में भी इन नियमों का पालन करे। अन्यथा नियम के बिना व्रती मनुष्य व्रत के फल को प्राप्त नहीं होता है। यदि शक्ति हो तो भी न खाकर पुरुषोत्तम मास का व्रत करें। यदि निराहार न रहा जाए तो घी पी लेवे या माँगा हुआ दूध पी लेवें, या व्रत करने वाला शक्ति के अनुसार फलाहार कर लेवें। बुद्धिमान पुरुष जैसे व्रत का भंग नहीं हो वैसा ही कर लेवें। पुरुषोत्तम मास में एक लाख तुलसी दल से शालिग्राम का पूजन करने से अनन्त पुण्य होता है। जो इस विधि से पुरुषोत्तम मास का व्रत करते हैं, उनको देखकर

यमराज के दूत दूर से ही भाग जाते हैं। हे राजन्! इस मास का व्रत सौ यज्ञों से भी श्रेष्ठ है। सौ यज्ञों के करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। पुरुषोत्तम मास का व्रत करने से गौलोक प्राप्त होता है। पृथ्वी में जितने तीर्थ है और क्षेत्र हैं वे सब पुरुषोत्तम मास का व्रत करने वाले के शरीर में वास करते हैं।

तेइसवाँ अध्याय

राजा ने कहा-हे मुनि श्रेष्ठ! पुरुषोत्तम मास में दीपदान का क्या फल है सो आप कृपा करके मुझसे कहिये। बाल्मीकि ऋषि बड़े हर्ष से कहने लगे-भाग्य नगर में चित्रबाहु नाम का राजा राज्य करता था। वह सत्य प्रतिज्ञा वाला, बुद्धिमान, शूरवीर, क्षमाशील, सब धर्मों को जानने वाला, शीलरूप, दया से

युक्त, पूजनीय भगवान् का भक्त था। एक दिन दूर से आये हुए अगस्त्य मुनि को देखकर दण्डवत् नमस्कार कर, विधि से पूजन करके भक्ति से आसन बिछाकर ऋषि के आगे बैठकर, नम्रता के साथ बोला-आज मेरा जन्म सफल हुआ, जो मुनिराज मुझ सेवक के घर पर आये फिर सिर झुकाकर राजा हाथ जोड़कर कहने लगा महाराज मेरे यहाँ बहुत सी लक्ष्मी और अकंटक राज्य कैसे हुआ और वह पतिव्रता स्त्री कैसे प्राप्त हुई? मैंने ऐसा कौन सा अच्छा कार्य किया था? यह सब कृपा करके मुझसे कहिये। अगस्त्य जी राजा से कहने लगे-हे राजन्! मैं तेरे पूर्व जन्म का चरित्र कहता हूँ। सुन्दर चमत्कारपुरी में मणिग्रीव नाम से तू हुआ था। तू

नास्तिक, दुष्ट चरित्र वाला, कृतघ्न, खोटी बुद्धि वाला था। परन्तु तेरी यह सुन्दर स्त्री मन, कर्म, वाणी से पति सेवा में परायण, पतिव्रता, महाभाग्यशाली, धर्म में निष्ठा वाली थी। तू पाप कर्म करने वाला, जाति वाले और भाई बन्धुओं से त्यागा हुआ था। क्रोधी राजा ने तेरा सब उत्तर धन छीन लिया फिर जो कुछ बचा वह जाति के लोगों ने छीन लिया। सब धन के चले जाने पर तुझको बड़ा क्लेश हुआ। धन के नाश होने पर अत्यन्त उद्धिग्न मन हो जाने पर भी इस पतिव्रता स्त्री ने तेरा त्याग नहीं किया। हे राजन्! इस प्रकार उस वन में तू रहता था। एक दिन मणिग्रीव धनुष उठाकर मृग के मांस के लिये बहुत से सिंह मृगों से भरे हुए वन को गया। उस

मनुष्य रहित वन के मार्ग के भूले हुए दुःखित ब्राह्मण को देखकर तेरे मन में दया उत्पन्न हो गई और तू उसको उठाकर अपने आश्रम में ले आया। तुम दोनों स्त्री-पुरुषों ने उस उग्रदेव की अत्यन्त सेवा की। तब यह महायोगी चेतना को प्राप्त होकर, आश्चर्य करने लगा कि मैं कहाँ था और इस वन में मुझको कौन लाया? उग्रदेव बोला मैं तुमको नहीं जानता हूँ कि तुम कौन हो सो बताओ? क्योंकि बुद्धिमान ब्राह्मण को बिना जाने हुए नहीं रहना चाहिये। मणिग्रीव कहने लगा-हे ब्राह्मण! मैं भाई बन्धुओं तथा जाति के लोगों से त्यागा हुआ मणिग्रीव नाम का शूद्र हूँ। उग्रदेव ने शूद्र के वचनों को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता से फलाहार कर जल पिया। तब मणिग्रीव ने कहा-

हे मुनि श्रेष्ठ! मनुष्य रहित, बिना जल के, दुष्ट सिंह व्याघ्रादिक जन्तुओं ने परिपूरित इस महावन में आपको कहाँ जाना है? उग्रदेव जी बोले-मैं ब्राह्मण हूँ प्रयाग जाने की इच्छा से इस अनजान वन में आ गया हूँ। तुमने मुझको जीवनदान दिया अतः बताओ तुमको क्या प्रदान करूँ? हे मणिग्रीव! किस दुःख से तुम दोनों स्त्री-पुरुषों ने वन का आश्रय लिया सो मुझसे कहो। मैं तुम्हारे सब दुःख दूर करने की चेष्टा करूँगा। अगस्त्य ऋषि कहने लगे-इस प्रकार स्त्री के सामने उग्रदेव के वचनों को सुनकर, मणिग्रीव मुनीश्वर की प्रार्थना कर दरिद्रता रूपी समुद्र से पार उतरने के लिये अपने अत्यन्त भयंकर अनेक कर्मों को सुनाने लगा।

चौबीसवाँ अध्याय

उग्रदेव को मणिग्रीव सब कुछ बताकर बोला–हे ब्राह्मण! इस समय मुझ पाप युक्त पर आप अनुग्रह करें, मेरे किसी पूर्व जन्म के पुण्य से ही आप इस वन में पधारे हैं, आप उपदेश रूप पदार्थ से हमको कृतार्थ करिये। जिससे मेरा यह तीर्थ दारिद्र्य क्षण भर में नष्ट हो जाए और अतुल वैभव को प्राप्त होकर मैं स्वेच्छा से विचरूं।

उग्रदेव जी बोले–हे महाभाग! तुम कृतार्थ हुए, जो तुमने मेरा अतिथि सत्कार किया है, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा। बिना व्रत, बिना तीर्थ, बिना दान, बिना परिश्रम तेरा दारिद्र्य नष्ट हो जायेगा। ऐसा ही मैंने निश्चय किया है। इस मास के आगे तीसरा मास

मुरुषोत्तम मास है। इसलिये तुम दोनों स्त्री-पुरुष यत्न के साथ, श्री पुरुषोत्तम मास में भगवान की प्रसन्नता के लिये, दीपदान करना जिससे तुम्हारा यह दारिद्र्य मूलसहित नष्ट जो जायेगा। तिलों के तेल से दीपदान करना, ऐश्वर्य होने पर घी से करना। इस समय इस वन में बसते हुए तेरे लिये दूसरा कोई उपाय नहीं है।

अगस्त्य जी बोले-इस प्रकार कहकर श्रेष्ठ ब्राह्मण दोनों हाथों में मुरली लिए हुए श्री कृष्ण भगवान् को स्मरण करता हुआ प्रयाग की तरफ चल दिया। दो महीने व्यतीत होने पर जब श्री पुरुषोत्तम मास आया, तब गुरु भक्ति में तत्पर दोनों स्त्री-पुरुष उस मार्ग में दीपक दान करने लगे। आलस्य रहित वे दोनों,

ऐश्वर्य के लिए, इंगुदी के तेल से दीपक जलाने लगे और इसी प्रकार सारा पुरुषोत्तम मास बिताया। उग्रदेव की कृपा से अन्तकरण को शुद्ध करके, अन्त में मरण को प्राप्त हो, स्वर्ग को गये और वहाँ से सब भोगों को भोगकर, उग्रदेव की कृपा से, वे दोनों श्रेष्ठ जन्म को प्राप्त हुए। पूर्व जन्म में जो मृगसिंहा में तुम तत्पर थे उस जन्म में बीरबाहू के पुत्र चित्रबाहू के नाम से विख्यात हुए। इस समय तेरे आधे अंग को हरने वाली जो तेरी स्त्री है, वह पति के पुण्य का आधा भाग लेती है। इंगुदी के तेल से श्री पुरुषोत्तम मास में दीपदान करने से तेरा अकंटक राज्य है। जो मनुष्य घी से अथवा तिलों के तेल से अखंड दीपक करे तो फिर कहना ही क्या है, पुरुषोत्तम

मास के दीपक का ऐसा ही फल है इसमें संशय नहीं है। उपवासादिकों से पुरुषोत्तम मास का व्रत करें तो फिर कहना ही क्या है। बाल्मीकि जी बोले- इस प्रकार अगस्त्य जी राजा चित्रबाहू के पूर्व जन्म की कथा कहकर सत्कार को प्राप्त होकर, नाथ रहित आशीर्वाद देकर, वहाँ से चले गये।

पच्चीसवाँ अध्याय

राजा दृढ़धन्वा कहने लगे-हे ब्राह्मण! हे मुने! अब कृपा करके पुरुषोत्तम के व्रत के उद्यापन को विधि सहित कहिये। मुनि बोले! पुरुषोत्तम मास के कृष्ण पक्ष में चौदस, नवमी, अष्टमी इन तिथियों मे उद्यापन करना चाहिये। इस पुण्य पुरुषोत्तम मास में प्रातः काल उठकर, प्रातः काल की सब क्रिया करके, जैसी

सामग्री मिले, उसी से तीस ब्राह्मणों को न्यौता देवें। यदि शक्ति न हो तो पाँच या सात ब्राह्मणों को न्यौता देवें। दोपहर में सुन्दर मण्डप बनावें। मण्डप के ऊपर ताँबा या मिट्टी के छिद्र रहित चार कलश स्थापन करें। चारों दिशाओं में पुरुषोत्तम भगवान की प्रीति के लिये, कलशों पर श्रेष्ठ नारियल धरें। उन कलशों पर वासुदेव, हलधर, प्रद्युम्न, उत्तमदेव या अनिरुद्ध, इन चारों को स्थापन करें। फिर वेद वेदाङ्ग के जानने वाले आचार्य को बुलाकर उस मण्डप के बीच में जिसमें चार ब्राह्मणों को जप के लिये वरण करें, उन ब्राह्मणों को अंगूठी आदि से युक्त दो-दो वस्त्र देवें। बड़े आनन्द से वस्त्र आभूषण संयुक्त आचार्य को विभूषित करें। फिर देह की

शुद्धि के लिये प्रायश्चित करें। फिर पूर्व कही हुई विधि से स्त्री सहित पूजा करे। वरण किये हुए ब्राह्मणों से चार प्रकार का चर्तुव्यूह का जाप करावें। चारों तरफ चार अखंड दीपक जलावें। फिर क्रम से नारियल आदि को से अर्घ्य दान करें। अर्घ्य देने का मन्त्र-हे देव देवेश। हे पुराण पुरुषोत्तम! हे हरे! आपको नमस्कार है। राधा सहित मेरे अर्घ्य को ग्रहण कीजिये। नवीन मेघ के समान श्यामवर्ण दोनों हाथों में मुरली लिए हुए, पीताम्बर धारण किए हुए राधा सहित पुरुषोत्तम देव को मैं नमस्कार करता हूँ। फिर राधा सहित श्री हरि को पुष्पांजलि देवे। फिर स्त्री सहित भगवान् को साष्टांग नमस्कार करे। फिर ब्राह्मण को सुवर्ण सहित पूर्ण पात्र देवें और फिर आनन्द से आचार्य

को बहुत सी दक्षिणा देवें। पश्चात् भक्ति से स्त्री सहित आचार्य को वस्त्र आभूषणों से प्रसन्न करें। फिर ऋत्विजों को उत्तम दक्षिणा दें। स्त्री-पुरुषों के पहनने योग्य वस्त्र, शंकर पार्वती के नाम से देवें। आठ प्रकार का पद देवें और जूते का जोड़ा देवें। वैष्णव ब्राह्मण के लिये श्रीमद्‌भागवत् पुस्तक को देवे। चंचल आयु विचारता हुआ, अपनी शक्ति के अनुसार जल्दी देवे, देर न करें। साक्षात् अद्‌भुत भगवान् के रूप श्रीमद्‌भागवत को जो पण्डित ब्राह्मण को देता है, वह करोड़ों कुलों का उद्धार करता है और अप्सरा गणों से सेवित विमान में बैठकर, योगियों को भी दुर्लभ, गौलोक में जाता है।

छब्बीसवाँ अध्याय

अब उद्यापन के पश्चात् व्रत के नियम का त्याग करते हैं। बाल्मीकि ऋषि कहने लगे–हे राजन्! सम्पूर्ण पापों का नाश तथा भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिये विधि पूर्वक ग्रहण किये हुए नियमों के त्याग को विधि कहते हैं। हे राजन्! अयाचित व्रत में रात्रि के समय भोजन करने वाला मनुष्य ब्राह्मणों को भोजन कराके स्वर्ण का दान देवे। जो मनुष्य अमावस्या को भोजन करता है, वह दक्षिणा सहित गौ का दान देवे और जो आँवला स्नान करता है वह दूध या दही देवे। फलों के नियम में फलों का दान करे, तेल के स्थान में घी देवे और घी स्थान चून में देवे। धान्यों के नियम में गेहूँ और चावल देवे और पृथ्वी शयन

करने वाला सुन्दर तकिया तथा चद्दर सहित शैया दान करे। पत्तल तथा भोजन करने वाला मनुष्य घी और शक्कर का भोजन करावे। नख केशों को धारण करने वाल बुद्धिमान मनुष्य दर्पण देवे। नियम के त्यागने पर अनेक प्रकार के रस देवे, दीपदान करता हो तो पात्र सहित दीपक देवे। जो मनुष्य अधिक मास में ऐसा भक्ति से करता है, वह बैकुण्ठ में जाकर वास करता है।

सत्ताईसवाँ अध्याय

श्री नारायण कहने लगे कि बाल्मीकि ऋषि इस प्रकार राजा दृढ़धन्वा को उद्यापन विधि बता करके कहने लगे-हे राजन्! तेरा कल्याण हो। अब मैं पापनाशिनी सरयू को जाता हूँ। तब राजा आनन्दयुक्त स्त्री सहित उनकी पूजा

करने लगा। ऋषि ने राजा की पूजा व
अंगीकार कर उसे आशीर्वाद दिया। त
सांयकाल हो जाने पर, बाल्मीकि ऋ
वहाँ से चल दिये। राजा भी सीमा त
उनको पहुँचाकर अपने घर आया अ
अपनी रानी गुण सुन्दरी से कहने लग

हे सुन्दरी! रागद्वेश वाले, गन्धर्व न
के समान, इस असार संसार में मनुष
को क्या सुख है? नाशवान शरीर व
छोड़कर ध्रुव को प्राप्त करने के लि
श्री पुरुषोत्तम का स्मरण करने के लि
मैं वन में जाता हूँ। तब वह पतिव्रता ऐ
वचन सुनकर अत्यन्त नम्रता से, हा
जोड़कर कहने लगी–हे पतिदेव! मैं भ
आपके साथ चलूँगी। पतिव्रता स्त्रिय
के लिए तो पति ही देवता है। इस प्रका
प्रिया का वाक्य सुनकर और अंगीका

करके राजा पुत्र का राज्याभिषेक कर
त्नी के साथ तत्काल मुनियों से सेवित
वन को चल गया। इस प्रकार व्रत की
विधि में स्थित हुए तपोनिधि राजा की
वह पतिव्रता रानी सेवा में तत्पर रहती।
राजा के इस प्रकार करते हुए, सम्पूर्ण
पुरुषोत्तम मास के समाप्त होने पर, वहाँ
पर विमान आया और विमान पर चढ़कर
दोनों सुन्दर नवीन शरीर धारण कर
तत्काल गौलोक को चला गया था।

तपोनिधे! सब लोगों के हित के लिये,
वह कथा मेरे से कहिए कि उस बन्दर ने
तीन रात्रि वहाँ पर स्नान किया, वह बन्दर
कौन था उसने क्या आहार किया, कहाँ
उत्पन्न हुआ और उसके अनजाने ही
पुरुषोत्तम मास में स्नान करने का क्या
फल हुआ?

श्री नारायण बोले-केरल देश मे
उत्पन्न अत्यन्त लोभी एक ब्राह्मण था
इस कर्म से लोगो में वह कंजूस नाम से
विख्यात था। यद्यपि उसके पिता ने
उसका चित्रशर्मा नाम रखा था। वह
कभी भी कोई धार्मिक कृत्य नहीं करत
था। एक वन में बिचरने वाला माली
उसका मित्र था। वह ब्राह्मण सदैव अपने
उस मित्र माली के पास जाकर और रो
कर बारम्बार अपना दुःख कहा करत
था। कि नगर के रहने वाले सदैव मेरा
तिरस्कार करते हैं। इससे इस नगर मे
रहना अति कठिन हो गया है। वह माली
उसको दीन जानकर, दया करता हुआ
बोला-हे चित्रशर्मा! तुम इस समय बाड़ी
में रहो। कंजूस, माली के वचन सुनकर
बड़े आनन्द से उस बाड़ी में रहने लगा।

नित्य उसके निकट रहता और उसकी आज्ञा का पालन करता। इससे उस माली का उस ब्राह्मण पर दृढ़ विश्वास हो गया। तब उस माली ने अत्यन्त विश्वास से (अपने समान) उस बाड़ी का उसको अधिपति बना दिया और सब प्रकार से बाड़ी की चिंता छोड़ कर स्वयं ने राज मन्दिर में नौकरी करली। इधर लोभ से अत्यन्त दुर्बल वह कंजूस, बेचने से बचे फलों को, बड़े आनन्द से निर्भय होकर खाने लगा। उस वाड़ी से उत्पन्न हुए द्रव्य को निर्भय होकर आप ही ग्रहण कर लेता और जब बाड़ी का माली पूछता तो असत्य बोलकर बहाना करता। इस प्रकार बुढ़ापे से गलित शरीर वाला वह दुर्बुद्धि कंजूस सत्तासी वर्ष का हो गया। तत्पश्चात् वह मूढ़ बुद्धि वाला कंजूस

मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसको जलाने के लिए काष्ठ भी नहीं मिला। वेदों के जानने वाले विद्वान कहते हैं कि बिना फल भोगे पाप नष्ट नहीं होते। मरने के पश्चात् वह यमदूत के मुदगरों की मार से हा-हा कार करता हुआ अति भयंकर यम मार्ग को चला। विलाप करते हुए उस ब्राह्मण को यमराज के दूत यमराज के निकट लेकर गये। चित्रगुप्त उसको देखकर, उसके शुभ-अशुभ कर्मों को देखकर अपने स्वामी धर्मराज से कहने लगा-यह कंजूस ब्राह्मण अधर्मी है। इस दुर्बुद्धि वाले धन के लोभी का कुछ भी अच्छा कार्य नहीं है। यह बाड़ी में रहता हुआ बड़े पाप कर्म करता रहा। बाड़ी के मालिक माली से विश्वासघात किया। श्री नारायण बोले हे-नारद! इस

प्रकार चित्र गुप्त के वाक्य सुनकर धर्मराज अत्यन्त क्रोध से भरे हुए वचन बोले-यह हजार वर्ष तक बन्दर की योनि में रहे और विश्वासघात का फल इसको बाद में मिलेगा।

अट्ठाईसवां अध्याय

श्री नारायण कहने लगे कि हे नारद! इसके पश्चात् वह अत्यन्त दुःखों को भोगकर बन्दर योनि को प्राप्त हुआ। पापों का नाश करने वाला एक सरोवर था, जो देवताओं को भी दुर्लभ मृग तीर्थ नाम से विख्यात था। इसी तीर्थ में वह ब्राह्मण, फलों की चोरी के पाप से, बन्दर की योनि को प्राप्त हुआ। नारदजी कहने लगे-हे प्रभो! करोड़ों पापों से युक्त वह बन्दर उस तीर्थ में कैसे बसता रहा? श्री नारायण बोले-चित्रकुण्डल नाम वाला

कोई वैश्य था। उसकी तारका नाम की स्त्री थी। इन दोनों के पुरुषोत्तम मास करते हुए पुरुषोत्तम मास चला गया। पिछला दिन आने पर स्त्री सहित चित्रकुण्डल ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ उद्यापन किया और उद्यापन कराने के निमित स्त्री सहित वेद वेदाङ्ग को जानने वाले ब्राह्मण को बुलाया। हे नारद! वहाँ धन के लोभ से कंजूस ब्राह्मण भी पुहँच गया! जब उद्यापन विधि समाप्त हो गई तो चित्रकुण्डल वैश्य ने स्त्री सहित ब्राह्मणों को अत्याधिक दान देकर प्रसन्न किया। उसकी बहुत सी दी हुई दक्षिणा से ब्राह्मण अति प्रसन्न होकर अपने-अपने घरों को चले गये। परन्तु अत्यन्त लोभी वह कंजूस रोता हुआ उसके आगे आकर खड़ा हो गया और विनय से नम्र

होकर अति गद्‌गद्‌ वाणी से चित्रकुण्डल से बोला- हे चित्रकुण्डल! वैश्यों के पति आप इस समय कृतार्थ हो जो आपने पुरुषोत्तम का सेवन किया। ब्राह्मणों को बहुत सा धन दिया। किंतु मुझ भाग्यहीन को क्यों नहीं कुछ दिया। उस कंजूस के ऐसे वचन सुनकर, उस वैश्य ने कंजूस को भी बहुत सा धन दिया। उस ब्राह्मण ने इस धन को लेकर पृथ्वी में गाढ़ दिया। वहाँ पर उस लोभी ब्राह्मण ने पुरुषोत्तम माहात्म्य के धन के लोभ ब्राह्मण ने पुरुषोत्तम माहात्म्य के धन के लोभ से स्तुति की पूजा को देखकर पुरुषोत्तम जी के धन के लोभ से स्तुति सुनकर प्रसन्न हुए। जिसके फल से वह ब्राह्मण मृग तीर्थ को प्राप्त हुआ। वह तीर्थ जल वाला, घनी छाया वाला मीठे-

मीठे फल वाले पेड़ों से शोभित अत्यन्त सुन्दर वन था।

श्री नारायण कहने लेग-हे नारद! जब श्री रामचन्द्रजी ने समुद्र में पुल बाँधकर, रावण का वध कर दिया, तो रावण के मारे जाने से ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि सब देवताओं ने प्रसन्न होकर श्री रामचन्द्रजी को वर माँगने के लिए कहा तो उस समय रामचन्द्रजी ने कहा हे देवताओं! यहाँ पर जो शूरवीर बानर राक्षसों के हाथों मारे गये हैं, उनको शीघ्र जीवित कर दो। इतना सुनते ही देवताओं ने अमृत की वर्षा करके सब बानरों को जीवित कर दिया। जीवित होकर सारे बानर जय जयकार कर उठे। फिर श्री रामचन्द्रजी विमान में बैठकर चारों ओर खड़े हुए बानरों को कहने लगे-जहाँ-जहाँ पर मेरे

ये बहुत काल तक जीने वाले बानर बसेंगे, वहाँ-वहाँ पुष्प फल वाले वृक्ष हो जायेंगे। नदी मीठे जल वाली हो जाएगी। शीतल, सुन्दर सरोवर होंगे। मेरी आज्ञा से तुम सब जाओ तुमको कोई नहीं रोकेगा। हे नारद! फिर वह लोभी बानर पर्वत जैसा बढ़कर, बहुत सी भूख और प्यास से युक्त होकर, लोभी हो वन में विचरने लगा। जन्म से ही उसके मुख में पित्त की पीड़ा थी। उस पीड़ा से रात-दिन उसके मुख से रुधिर बहता था और वह अत्यन्त पीड़ा युक्त होकर कुछ भी नहीं खा सकता था। वह बानर चपलता वश श्रेष्ठ फलों को तोड़ता और मुख के निकट ले जाकर बहुत से फलों को फेंक देता। इस प्रकार नित्य प्रति निराहार रहते हुए दैव योग से पुरुषोत्तम

मास आ गया। उस मास में भी वह उसी तरह शीत, वायु आदि से पीड़ित रहा। कोई समय कृष्ण पक्ष में गहन वन में विचरता हुआ, वह प्यासा अमृत जैसे कुण्ड के जल को पीने को समर्थ नहीं हुआ। परन्तु भूख से व्याकुल होकर भी चपलता वश वृक्ष के ऊपर चढ़ गया, एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर जाता हुआ कुण्ड में गिर गया। तभी विमान वहाँ पर आया, जो नाचती हुई अप्सराओं और सुन्दर गाते हुए गन्धर्व, किन्नरों से सुशोभित था। इस प्रकार सुन्दर शरीर को धारण कर वह महाभाग वानर अपने शरीर को देखकर अत्यन्त आश्चर्य को प्राप्त हुआ और कहने लगा कि मुझ महापापी को यह विमान का सुख जो अत्यन्त पुण्य वालों के लिए नियुक्त है,

कैसे मिला? मैंने तो कभी कोई सुकृत किया ही नहीं, जिससे मैं हरि के स्थान को प्राप्त होऊँ।

उन्तीसवाँ अध्याय

उस लोभी के ऐसे वचन सुनकर दूत कहने लगे-क्या तुमने भारी कार्य नहीं किया? हे प्रभो! सबसे उत्तम मास कैसे नहीं जाना, यह पुरुषोत्तम मास नाम से विष्णु का प्रिय है और महापवित्र है। उसमें तुमने ऐसा तप किया है, जो देवताओं को भी प्राप्त नहीं हो सकता है। हे महाराज! वन में बन्दर के देह में तुमने इसका प्रभाव नहीं जाना। अनजाने में मुख के रोग से तुम्हारा निराहार व्रत हो गया। तुमने बन्दरपन की चंचलता से वृक्ष के फल तोड़ कर पृथ्वी पर फेंक दिये। उनसे दूसरे मनुष्य तृप्त हो गए और

अन्दर के बड़े भारी दुःख से पानी भी नहीं पिया। इसीलिये तुम्हारे अनजाने में बड़ा भारी तप हो गया और फलों के गिराने से परोपकार भी हो गया। इस तीर्थ में 5 दिन गोते भी खाये। इसी से पुरुषोत्तम मास में तुम्हारा स्नान का फल भी हो गया। सो यह सब फल सफल हो गया। श्री नारायण बोले-इस प्रकार कहे हुए अपने भाग्य को सुनकर वह गौलोक को प्राप्त हो गया।

श्री नारायण बोले-इस आश्चर्य को देखकर सब देवता चकित हो गये और पुरुषोत्तम की बड़ाई करते हुए सब अपने-अपने स्थानों को चले गये। नारद जी कहने लगे-हे तपोधन! आपने दिन के प्रथम भाग का कृत्य कहा। पिछले भाग का कृत्य कहा। पिछले भाग का

कृत्य कैसे करना चाहिये। कृपा करके यह भी कहिये। श्री नारायण बोले-प्रातः काल को कर्म विधि से समाप्त कर फिर मध्यान्ह काल की संध्या को तिलों से अर्पण करें। अतिथि के लिए द्वार पर देखे, जो अतिथि भाग्य से गौ के दुहने के समय, आ जाए तो उस की पूजा करें, अत्यन्त भक्ति से यथाशक्ति अन्नादि से उसको सन्तुष्ट करें। भगवान् यम कहते हैं कि फिर पूर्व की तरफ मुख करके मौन होकर शुद्ध सुदर पात्र में, अन्न की सराहना करते हुए भोजन करें। पहले स्वाहा के अन्त में, ओंकार का अच्चारण कर, घी से लपेटे हुए पाँच ग्रासों को बिना दाँत लगाए जिव्हा से निगल जाए। फिर मन लगाकर पहले मीठा भोजन खाए। ब्राह्मण शास्त्र

विरुद्ध अभक्ष्य भोज्यादिक पदार्थों को, न खायें। सूखा बासी भोजन भी अभक्ष्य कहा है। भोजन पर बैठकर, श्रेष्ठ मार्ग का विरोध न करें। श्रेष्ठ शास्त्र के आश्रय से परमब्रह्म श्रीकृष्ण का विचार कर, फिर बुद्धिमान पुरुष सर्वत्र आजीविका न हो तब भी एकाग्र मन होकर, दो घड़ी आत्म विद्या का श्रवण करें। फिर यथेष्ट अपना काम धन्धा करें और सम्पूर्ण सिद्धियों के देने वाले श्री कृष्णचन्द्र का मन में ध्यान करें। सूर्य के अस्त होने पर तीर्थ अथवा घर पर जाकर पैर धोकर, सांयकाल की सन्ध्या करें। सांय काल की संध्या करके, अग्नि को आहुति देकर अनुचरों सहित अल्प भोजन कर बैठ जाय। भोजन कर, तकिया आदि सहित कोमल शैय्या पर सोवें।

गृहस्थी पुरुष सदैव भली प्रकार से गृहस्थ के कर्मों को करें। हिंसा! नहीं करनी चाहिए, सत्य बोलना, सब प्राणियों की रक्षा और दया करना, यह सब गृहस्थियों के लिये धर्म कहे गये हैं।

तीसवाँ अध्याय

नारदजी बोले-हे तपोनिधे! आपने पहले पतिव्रता स्त्री की स्तुति की । अब कृपा करके उनके सब लक्षणों को संक्षेप में वर्णन कीजिये। सूतजी कहने लगे-हे ऋषियों! नारद जी के इस प्रकार पूछने पर, श्री नारायण बोले हे नारद! सुनों मैं पतिव्रता स्त्रियों के उत्तम लक्षण कहता हूँ। पति चाहे कुरूप हो या स्वरूप, चाहे श्रेष्ठ स्वभाव वाला हो, रोग से युक्त हो या पिशाच, क्रोधी हो या मद्य का पीने

वाला हो, वृद्ध हो, मूर्ख हो, गूंगा हो या
अन्धा, बहरा हो, भयंकर हो तो भी पति
के मन को आनन्द दें। सास, ससुर विशेष
करके अपने पति की भक्ति करें। धर्म
के कार्यों में अनुकूल रहे और द्रव्य का
संचय करे, जो सदैव घर के काम धंधे
समर्थ हो। आसन, भोजन, दान,
सम्मान, मधुर भाषण इनमें हमेशा घर
की मुख्य स्त्री को चतुर रहना चाहिए
घर के खर्च के लिये स्वामी ने जो द्रव्य
दिया हो, उसी से घर के खर्च को चलान
तथा अपनी बुद्धि से कुछ बचा भी लेन
चाहिए। दान के लिये दिये हुए द्रव्य को
छुपाकर अपने ही पास नहीं रखना
चाहिये। भर्त्ता की आज्ञा के बिना अपने
बांधवों को कुछ भी धन नहीं देना
चाहिये। दूसरे से बोलना नहीं, संतोष

रखना यह सब पतिव्रता के लक्षण हैं।

श्री नारायण कहने लगे-हे नारद! सब लोकों में और देवताओं में पति के, बराबर और कोई भी देवता नहीं है। पति की प्रसन्नता से सब कामनायें पूरी हो जाती हैं और अप्रसन्नता से सब काम नष्ट हो जाते हैं।

इकतीसवाँ अध्याय

सूतजी कहने लगे कि हे विप्रो! इस प्रकार नारद मुनि पतिव्रता स्त्रियों के धर्म का वर्णन सुनककर कुछ थोड़ा सा और पूछने के लिए बोले नारद कहने लगे-हे बदरीपते! आपने सब दानों से उत्तम कांसी का सम्पुट कहा, सो कारण सहित इसके विस्तार पूर्वक मुझसे कहिये। श्री नारायण बोले हे ब्राह्मण! इस व्रत को पहले एक बार श्री पार्वती जी ने किया

था। उस समय श्री पार्वती जी ने श्री
महादेव जी से पूछा-कौन सा उत्तम दान
देना चाहिये, जिससे मेरा पुरुषोत्तम का
व्रत सम्पूर्ण हो जाये?

श्री महादेव जी बोले-कांसी का बर्तन
तीस मालपुवे भरकर सात धागे से
लपेटकर विधिवत् पूजा कर और व्रत
सम्पूर्णता के लिये विद्वान ब्राह्मण को
देवे। शक्ति हो तो ऐसे तीस पात्रों को
देवें।

इस प्रकार श्रीमहादेवजी के उपकार
करने वाले सुन्दर वचन सुनकर सब
लोकों का हित चाहने वाली श्री पार्वती
जी प्रसन्न होकर विद्वान ब्राह्मणों को
तीस कांसी के बर्तन मालपूवे से भरकर
देकर अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुई।
सूतजी कहने लगे कि हे विप्रो! इस प्रकार

श्री नारायण जी के अमृत समान वचन सुनकर श्री नारद जी अत्यन्त तृप्त होकर बारम्बार नमस्कार कर फिर बोले- पुरुषोत्तम सब साधनों में श्रेष्ठ हैं। मैंने सब माहात्म्य सुन ऐसा ही निश्चय किया है। जिसके सुनने मात्र से भी, भक्ति से मनुष्यों के महापाप का नाश हो जाता है। यदि श्रद्धा और विधि से किया जाय तो कहना ही क्या है, मेरी बुद्धि से ऐसा ही प्रतीत होता है। इससे आगे मुझको और कुछ भी सुनना बाकी नहीं रहा, क्योंकि मैं इस कथारूपी अमृत से अत्यन्त तृप्त हो गया हूँ। उसके माहात्म्य सुनने से गंगा स्नान के समान फल प्राप्त होता है। पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करने का इसके सादर सुनने वाले को प्राप्त होता है। ब्राह्मण सुनकर ब्रह्मतेज, क्षत्रिय

राज्य सुख, वैश्यधन, शूद्र श्रेष्ठता तथा अन्य किरात क्षण आदमी मुक्ति आदि मनोवांछित वस्तु को प्राप्त होते हैं। इस पुरुषोत्तम मास माहात्म्य को लिखवाकर (खरीदकर) वस्त्र भूषण के साथ विधिपूर्वक ब्राह्मण को जो दान करता है। वह अपने तीन कुल के साथ गोपालों में सेवित देव दुर्लभ गौलोक को प्राप्त होता है। जिस घर में यह ग्रन्थ रत्न रखा है वह घर तीर्थ के समान है। इस प्रकार अत्यन्त पुण्यदायक पुरुषोत्तम मास के माहात्म्य को सुनकर विस्मित हुए विनय पूर्वक सूतजी से बोले। ऋषि बोले हे सूतजी! तुम धन्य हो। आपके मुख से कथा रूपी अमृत पान करके हम सब कृतार्थ हो गये। हे पुराणों के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ सूतजी! आपकी बड़ी उम्र हो

तथा आपकी कीर्ति अमर रहे। भगवान् की चरित्र लीला कथामृत को पीने से ही नैमिषारण्य वासी मुनियों ने आपको परम पूज्य ब्रह्मासन दिया है। सूतजी! जब तक भगवान् की पवित्र कीर्ति छाई हुई है, आप हमारे बीच में बैठे भगवान् की मनोहर कथायें सुनाते रहें।

इस प्रकार वह सूतजी ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर, सब ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा कर नमस्कार करके अपना कृत्य करने के लिये गंगाजी की ओर चल दिये और नैमिषारण्य से रहने वाले मुनि आपस में कहने लगे कि यह पुरुषोत्तम का माहात्म्य अत्यन्त श्रेष्ठ है और पुराना है, भक्तजनों को मनोवांछित फल देने में कल्पवृक्ष के समान है।

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जै जगदीश हरे स्वामी जै जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे॥ १॥
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिन से मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ २॥
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करुं जिसकी॥ ३॥
तुम हो पूर्ण परमात्मा तुम अर्न्तयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी॥ ४॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूर्ख खल कामी कृपा करो भर्ता॥ ५॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति॥ ६॥
दीनबन्धु दुःख हरता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा मैं तेरे॥ ७॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा॥ ८॥

शिव जी की आरती

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदा शिव, अर्द्धांगी धारा॥ टे
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥
दो भुज चारू चतुर्भुज दसभुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे॥
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥ जै०
श्वेताबर पीतांबर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥ जै०
कर में श्रेष्ठ कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता जगहर्ता जगपालन कर्ता॥ जै०
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों की एका॥ जै०
त्रिगुण शिव की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे॥ जै०

आरती दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय मंगल मूर्ति मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ टेक ॥
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्र बदन नीको। जै०
कनक समान कलेवर रक्तांबर राजे।
रक्त पुष्प की माला कण्ठन पर साजे॥ जै०
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।

सुर-नर-मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी ।। जै० ।।
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति।। जै०
शुम्भ निशम्भु विडारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती ।। जै०
चण्ड-मुण्ड संहारे सोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे।। जै०
ब्रह्माणी रूद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी।। जै०
चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृदंगा अरू बाजत डमरू।। जै०
तुम ही जगत की माता तुम ही हो भर्ता।
भक्तन की दुःख हर्ता सुख संपत्ति कर्ता ।। जै०
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नर-नारी।। जै०
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत कोटि रत्न ज्योति।। जै०
अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पावे।। जै०

लेखक ओम प्रकाश अग्रवाल की पुस्तकें घर बैठे (डाक) V.P.P. द्वारा मंगवाएँ

क्रम	पुस्तक	मूल्य
1.	अच्छा गृहस्थ	15.00
2.	अच्छे जीवन का सार	20.00
3.	तनाव कम करने के उपाय	20.00
4.	दुनियादारी	15.00
5.	सुखी कैसे हों	25.00
6.	सांसारिक बातें	25.00
7.	निरोग कैसे रहें	20.00
8.	जीवन क्या है ?	20.00
9.	किस्से मियां बीबी के	20.00
10.	खट्ठी मीठी बातें	20.00
11.	उलझनें संसार की	20.00
12.	बोध कथाएं	20.00
13.	अच्छे बोल	25.00
14.	इन्सान गरीब क्यों होता है	15.00
15.	घरेलू समाधान	30.00
16.	जीवन यात्रा	20.00
17.	ज्ञान शास्त्र	25.00
18.	ईश्वर की सत्ता को जानें	40.00
19.	सरल जीवन कैसे हों	20.00
20.	ईश्वर की रचना	40.0
21.	स्कूली बच्चों के लिए	15.0
22.	जीवन की राह	40.0

पुस्तक मंगवाने का पता — ☎ 221269

NOV-2003

अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्किट, नजदीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर-8